महाराष्ट्र, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब,हिमाचल,गुजरात एवं मध्यप्रदेश का लोकप्रिय समाचार पत्र

RNI NO.MAHHIN/2013/49425
डाक पंजीयन सं.MH/MR-NW-251/2013-/2015

e-paper:www.srushtiagronews.com

सृष्टी एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचाार पत्र

वर्ष : 1 अंक - 19 | मुंबई, 01 नवंबर से 15 नवंबर 2013 | मुल्य-2/- रुपए | पृष्ठ -8

सृष्टी एग्रो

परिवार की ओर से सभी देशवासियों को दीपो के त्योहार दीपावली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं.
....संपादक

बिगड़ा खाने का स्वाद, 15 साल के रिकॉर्ड भाव पर प्याज

नई दिल्ली, पवार ने प्याज के बढ़ती कीमतों पर कहा, 'मेरा मंत्रालय प्याज की किल्लत के लिए जिम्मेदार नहीं है. खाद्य मंत्रालय और उपभोक्ता मामलों का मंत्रालय इसे देखता है.'

उन्होंने कहा, 'प्याज की बढ़ती कीमतों से किसानों को कोई फायदा नहीं होता केवल बिचौलिए इससे पैसे कमा रहे हैं.'

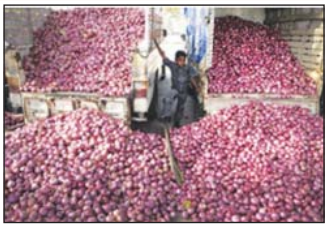

उन्होंने बढ़ती प्याज की कीमतों में कृषि मंत्रालय के रोल को बेतुका बताते हुए कहा, 'जमीनी हकीकत का ज्ञान होना बहुत जरूरी है. खेती से पैदावार बढ़ाना मेरे मंत्रालय का काम है और इस साल प्याज की पैदावार बढ़ी है.'

पिछले कई माह से सुखिर्यों में रहा प्याज 15 साल के रिकॉर्ड भाव पर पहुंच गया। थोक भाव में प्याज 60 रुपये प्रति किलोग्राम तक बिका। इसके पहले 1998 में प्याज का थोक भाव 90 रुपये प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया था। आजादपुर मंडी के प्याज कारोबारियों का कहना है कि 60 से 65 रुपये प्रति

किलो की दर से थोक भाव में भारी मात्र में प्याज बिका। उनका कहना है कि प्याज के थोक भाव में और तेजी आने की संभावना है। प्याज की इस तेजी ने आम जनता की कमर तोड़कर रख दी है। : खुदरा बाजार में प्याज की कीमत 90 रुपये प्रति किलो पहुंच गई है। प्याज के बढ़ते भाव ने आम जनता के स्वाद को बिगाड़ दिया है। हालांकि, इसके भाव आसमान पर देखकर निम्न व मध्यम वर्ग के लोगों ने इससे दूरी बना ली है।

हिसार मे लगा किसानो का मेला

हिसार मे 3 दिवसीय चलने वाले किसान मेले मे सृष्टी एग्रो न्यूज़ पेपर पहुंचा किसान मेले का शुभारम्भ हरियाणा के कृषि मंत्री परमवीर सिंह ने किया उन्होने किसानो के मेले के महत्व के बारे मे बताया उन्होने कहा यहाँ कृषक सम्रद्धशाली है! हरियाणा एक कृषि प्रधान राज्य है इसलिए ऐसे मेलो का महत्व बड़ जाता है

मेले मे किसानो की भारी उपस्तिथी , किसानो की जगरुकता बता रही थी !कि वह बाज़ार मे आने वाले नए उत्पाद व नयी तकनीक को लेकर कितने उत्साहित है दूसरी ओर उत्पाद कंपनियो ने बड़ चड़ कर हिस्सा लिया

दिल्ली सरकार को प्याज खरीदने की चुनाव आयोग ने दी अनुमति

दिल्ली, वालों को महंगे प्याज से राहत मिल सकती है. चुनाव आयोग ने दिल्ली सरकार को सस्ते दर पर प्याज बेचने की मंजूरी दे दी है. सीएम शीला दीक्षित आज मोबाइल वैन्स की संख्या और प्याज के दामों का एलान कर सकती हैं. बाजार में आवक बढ़ने से भी दाम गिरने के आसार हैं.

गौरतलब है कि दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने आयोग से दरख्वास्त कर मूल्य वृद्धि पर रोक लगाने के प्रयास के तहत कम दामों पर प्याज बेचने की अनुमति मांगी थी. अब मंजूरी मिलने के बाद आम लोगों को सरकार की ओर से सस्ते दर पर प्याज मिल पाएगा.

इसके अलावा चुनाव आयोग ने दिल्ली सरकार को नेफेड से प्याज खरीदने की इजाजत दे दी है. साथ ही सरकार ने विदेश से भी प्याज मंगाया है. वाघा बोर्डर के रास्ते अफगानिस्तान से भी प्याज आ रहा है.

1998 में जब प्याज के दाम इस तरह से बढ़े थे तो बीजेपी की सरकार यहां गिर गई. शीला दीक्षित की चिंता यह है कि इस बार कहीं ऐसा न हो. इसलिए वह अब जोर शोर से इसे ही गिराने में लग गई हैं.

तूफान से चावल की सप्लाई बाधित नहीं: थॉमस

नई दिल्ली, गंभीर चक्रवात से ओडिशा और आंध्र प्रदेश में फसल को भारी नुकसान हुआ है लेकिन इससे चावल के निर्यात और घरेलू बाजार में सप्लाई प्रभावित नहीं होगी। खाद्य एवं उपभोक्ता मामले मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रो. के वी थॉमस

ने कहा कि चक्रवात फाइलिन से ओडिशा और आंध्र प्रदेश के तटीय इलाकों में फसलों को भारी नुकसान जरूर हुआ है लेकिन केंद्रीय पूल में चावल का स्टॉक और खरीफ में होने वाली पैदावार के अनुमान से सप्लाई बाधित होने का सवाल ही नहीं है। दिल्ली में विश्व मानक दिवस पर आयोजित इंटरनेशनल स्टैंडर्ड एनश्योर पॉजिटिव चेंज के अवसर पर थॉमस ने कहा कि उद्योग एवं व्यापार से जुड़े संस्थानों एवं संगठनों को उत्पाद एवं सेवाओं के उच्च मानकों को अपनाने की आवश्यकता है। इससे न केवल अंतरराष्ट्रीय बाजार में उनकी मांग बढ़ेगी, बल्कि व्यापार में लागत भी कम होगी और उत्पादकता बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि चालू खरीफ में 923.2 लाख टन चावल उत्पादन का अनुमान है जबकि केंद्रीय पूल में 190 लाख टन चावल का स्टॉक मौजूद है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय चावल और गेहूं का अच्छा दाम मिल रहा है इसलिए निर्यात पर रोक लगाने का जरूरत ही नहीं है। केंद्र सरकार ने सितंबर 2011 में गेहूं के निर्यात से रोक को हटाया था। प्राइवेट निर्यातकों के साथ ही सार्वजनिक कंपनियां गेहूं का निर्यात कर रही हैं। ओडिशा में हर साल करीब 90-95 लाख टन चावल का उत्पादन होता है।

धान उत्पादन के अनुमान पर बाढ़ और ओले

नई दिल्ली, खरीफ 2013-14 में चावल के रिकॉर्ड उत्पादन की उम्मीद की खुशी जल्द ही खत्म हो सकती है, क्योंकि पाइलिन तूफान के चलते ओडिशा के कुछ हिस्सों में बाढ़ और पंजाब व हरियाणा में ओले गिरने से चावल उत्पादन पर असर पड? की आशंका है। केंद्रीय कृषि मंत्रालय के चौथे संशोधित अनुमानों (2013-14) में 9.23 करोड़ टन चावल उत्पादन का अनुमान जताया गया था। लेकिन ओडिशा के तूफान और बाढ़ प्रभावित जिलों में फसल को काफी नुकसान पहुंचने से अब यह दूर की कौड़ी नजर आ रहा है। कटक स्थित चावल शोध संस्थान के निदेशक त्रिलोचन महापात्र ने कहा कि वर्ष 2012-13 के दौरान ओडिशा में करीब 85 लाख टन चावल का उत्पादन हुआ था। ओडिशा में इस साल खरीफ सीजन में 36 लाख हेक्टेयर में धान की बुआई हुई है, जिसमें से 5 लाख हेक्टेयर में फसल प्रभावित हुई है। इस साल राज्य में उत्पादन 10 लाख टन तक कम हो सकता है। उन्होंने कहा कि 10.7 करोड़ टन (खरीफ और रबी दोनों में) चावल उत्पादन का पूर्व अनुमान हासिल नहीं किया जा सकेगा, क्योंकि ओडिशा में तूफान से और पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब और हरियाणा में ओलों और बारिश से फसल खराब हुई है।

आवश्यकता है

* प्रत्येक जिले से संवाददाता चाहिए
*जिला स्तर सेल कॉर्डिनेटर चाहिए
* विज्ञापन हेतु असिसटैंट मैनेजर चाहिए.
संपर्क
022-66998360/61.
Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,
info@srushtiagronews.com

✍ संपादकीय

बिन प्याज आंसू

प्याज और रोटी के साथ जीने वाला आम आदमी आज अपनी मूलभूत आवश्यकता के लिये भी सरकर की तरफ निरीह आँखो से देख रहा है उसे समझ नहीं आरहा आज़ादी इतने वषी बाद भी उसका संघर्ष प्याज और रोटी के लिये है वो समझ नहीं पा रहा चुनाव क्यो होते रहे है । सरकारे क्यो आती रही है । .ऐसा नहीं है कि सरकारे विचलित नहीं है उन्हे मालूम है प्याज ने विगत वषी मे सरकारो को किस तरह सत्ता से बेदख़ल किया है चुनावो के इस मौसम मे नेताओ के माथे पर चिंता की लकीर आना स्वभाविक है! प्याज की सियासत की शुरुआत ही 1977 में हुई थी तो ये गलत नहीं होगा। दरअसल 1977 में मोरारजी सरकार ने सत्ता संभालते ही प्याज की फसल पकने के वक्त इसके निर्यात पर प्रतिबंध लगाने की परंपरा शुरू की। किसानों से व्यापारियों के हाथ में प्याज पहुंचते ही प्रतिबंध हटा लिया जाता था। नतीजतन, एक तरफ किसान परेशान थे दूसरी तरफ मुनाफाखोरी से आम आदमी। चुनाव प्रचार के दौरान इंदिरा गांधी ने ये साबित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी की सरकार ने ही मुनाफाखोरों का साथ दिया। वो चुनावी सभा में बाकायदा प्याज दिखा कर जनता से पूछती थीं कि जो सरकार प्याज जैसी बुनियादी सब्जी के कीमतों पर भी नियंत्रण नहीं रख सकती, क्या उसे कुर्सी पर बने रहने का हक है। चुनाव के नतीजे ने प्याज की सियासत की कामयाबी की कहानी लिख दी। इंदिरा भारी बहुमत से सत्ता में वापस आ गईं। यही प्याज ऊँ सरकार की आँखो से आंसू निकाल चुकी है यही कारण है आम आदमी की परेशानी से सरकारो को सरोकार हो या ना हो पर वर्तमान सरकारे चुनाव मे प्याज की महिमा जानती है! सच तो यह है कि यह बताना लगभग असंभव है कि प्याज की कीमतें आसमान क्यों छू रही हैं। पिछले 10 सालों में प्याज की पैदावार 42 लाख मीट्रिक टन (एलएमटी) से बढ़कर 163 एलएमटी पर पहुंच चुकी है। इसके बावजूद इसकी कीमतों में ऐसी वृद्धि हैरान करती है। कुल मिलाकर देखें तो एक दशक में प्याज की पैदावार में ३०० फीसदी का उछाल आया है। ऐसे में सवाल उठता है कि सारे प्याज कहां जा रहे हैं? सितंबर में बारिश की वजह से ढुलाई में हुई दिक्कत जैसे तात्कालिक कारणों को छोड़ दिया जाए तो प्रमुख समस्या भारत में प्याज की सप्लाई चेन को लेकर है। कि उनके चलते किसानों से लेकर आम आदमी तक सभी पिस रहे हैं। सबसे बड़ा सवाल ये है कि अगर सरकार जानती है कि जमाखोरी हो रही है तो एक भी गुनहगार आज तक जेल की सलाखों के पीछे क्यों नहीं गया। सरकार कठघरे में हैं। क्योंकि मंत्री खुद अलग-अलग बयान देकर जनता को भरमाने में जुटे हैं। और आम आदमी चुनावी वादो का झुनझुना लेकर मूक तमाशा देख रहा है पर सत्ताधारी इस मौन को समझे .पेट की आग बड़ी बड़ी सत्ताओ को ज़मीन दिखा चुकी है

-ऋतु कपिल (कार्यकारी संपादक)

किसान मित्र: आधुनिक खेती में जैविक उर्वरकों का महत्व

अरविन्द कुमार यादव, कुलदीप सिंह, प्रद्युम्न यादव ,राकेश चौधरी एवं विमल कुमार
शोधार्थी चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है और उर्वरक ने कृषि समृद्धि मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। हमारे देश में 60–70 प्रतिशत जनसंख्या की जीविका कृषि पर आधारित है। देश के राष्ट्रीय उत्पादन में कृषि का योगदान लगभग 17–20 प्रतिशत है। कृषि के क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों का मुख्य योगदान रहता है। जैसे–जैसे खेती में आधुनिक तकनीक का समावेश दिन–प्रतिदिन होता गया उसी अनुपात में पौध संरक्षण रसायनों, खनिजों व उर्वरकों का उपयोग भी अधिक होने लगा । जहाँ देश खाद्यान उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ है वही पर अधिक उत्पादन प्राप्त करने की लालसा ने प्रकृति के वातावरण में प्रदुषण की बढ़ोतरी की कृषि में रासायनिक उर्वरकों के असंतुलित प्रयोग के कारण भूमि की उर्वरा शक्ति अत्यधिक कम हो गई। कीटनाशक एवं खरपतवारनाशी दवाइयों, रासायनिक उर्वरकों के ज्यादा प्रयोग से मिट्टी में पाए जाने वाले लाभदायक कीट, जीवाणुओं, भूमि की जल धारण क्षमता में कमी, मृदा के गुणों में परिवर्तन एवं भू–क्षरण को बढ़ावा मिलता जा रहा है। सघन शस्य चक्रों की वजह से भूमी की उर्वरा शक्ति में कमी आई है। ऐसे में आज भूमि की उर्वरा शक्ति बनाए रखने और उसे बढ़ाने के लिए कार्बनिक खाद के साथ जैव उर्वरक का प्रयोग अति आवश्यक है।

1जैव उर्वरक क्या है–

'जैव उर्वरक' सूक्ष्म जीवों को प्रयोगशाला में तैयार किया गया वह कृत्रिम कल्चर (टीका) है जिसमें हजारों, लाखों की संख्या में सूक्ष्म जीवाणु होते हैं। जिनके प्रयोग से फसल उत्पादन में वृद्धि होती है तथा भूमि की उर्वरा शक्ति में सुधार आता है।

ये कल्चर अलग–अलग फसलों के अलग–अलग प्रकार के होते है जो वायुमण्डलीय नाइट्रोजन को पकड़कर फसल को उपलब्ध कराते है और मिट्टी अघुलनशील फास्फेट को घुलनशील बनाकर पौधों को उपलब्ध कराते हैं। जैविक खाद के प्रयोग से 30 से 40 किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हैक्टेयर भूमि को प्राप्त होती है तथा उपज में 10 से 20 प्रतिशत तक की वृद्धि होती हैं। अतः रासायनिक उर्वरकों को थोड़ा कम प्रयोग करके बदले में जैविक खाद का उपयोग करके भूमि की उर्वरा शक्ति को बनाये रखते हुए फसल उत्पादन बढ़ाया जा सकता हैं। जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों के पूरक तो है ही साथ उनकी क्षमता भी बढ़ाते हैं। फास्फोबैक्टीरिया और माइकोराइजा नामक जैव उर्वरक के प्रयोग से खेत में फास्फोरस की उपलब्धता में 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोतरी होती है।

2जैव उर्वरकों का प्रयोग क्यों करें–

फैक्ट्री निर्मित उर्वरक महंगे होते क्योंकि कच्चा पदार्थ आयात करना पड़ता हैं। प्रति किलोग्राम उर्वरक निर्माण में अधिक ऊर्जा की खपत होती है। सरकार द्वारा सब्सिडी कम करने की वजह से उत्पादन लागत में वृद्धि हो गई है। इसलिए जैव उर्वरक रासायनिक उर्वरकों का अच्छा पूरक हैं।

3 जैव उर्वरकों का वर्गीकरण–

जैव उर्वरक मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं:–

1नाइट्रोजन जैव उर्वरक, 2. फास्फोरस जैव उर्वरक 3. जैविक पदार्थ विघटक।

तालिका 1: जैव उर्वरकों के रूप में उपयोग किये जाने वाले जीवाणु:–

	जैव उर्वरकों का नाम	योगदान	लाभकारी
1.	नाइट्रोजन		
	राइजोबियम सहजीवी	;द्व 50–30 ग्र नाइट्रोजन है। ;इद्व खेत में अवशेष नाइट्रोजन छोड़ना। ;ब्द्व 10–30: उपज वृद्धि। ;क्द्व उर्वरा शक्ति बनाये रखना।	धान, मूंग, उड़द, मटर, चना, मूँगफली, सोयाबीन, बरसीम, रिजका।
	एजोटोबेक्टर	;द्व 20–40 मि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति किलोग्राम कार्बन स्त्रोत से। ;इद्व विटामिन बी, इन्डोल एसिटिक एसिड, जिबरेलिक एसिड हार्मोन में वृद्धि। ;ब्द्व उपज में वृद्धि। ;क्द्व पादप बीमारियों का जैविक नियन्त्रण।	सरसों, केला, गन्ना, अंगूर, पपीता, तरबूज, टमाटर, मिर्च, भिण्डी।
	एजोस्पीरिलियम	(a) 20–40 कि.ग्रा. नाइट्रोजन का स्थिरीकरण। (b) जड़ों का विकास। (c) पादप वृद्धि और उपज में वृद्धि।	धान, गन्ना, मोटे अनाज वाली फसल, गेंहू, ज्वार, बाजरा।
	बी.जी.ए. (नील हरित शैवाल)	(a) 20–30 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टेयर। (b) पादप हार्मोन में वृद्धि (ऑक्जीन, इन्डोल एसिटिक एसिड, जिबरेलिक एसिड)	धान।
	एजोला	;द्व 40–80 कि.ग्रा. नाइट्रोजन प्रति हैक्टेयर स्थिरीकरण। ;इद्व हरी खाद के रूप में उपयोग।	धान।
2.	फास्फोरस		
	फास्फोरस घोलक जीवाणु खाद	(a) 30–35 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हैक्टेयर भूमि में मिलाते है। (b) फसल उत्पादन में वृद्धि।	500 ग्राम टीका प्रति हैक्टेयर बीज उपचार व 2 कि.ग्रा. टीका प्रति हैक्टेयर भूमि उपचार के लिए आलू, गेंहू।
	वी ए एम	(a) पौधों का नाइट्रोजन, फास्फोरस पोटेशियम, जिंक तथा कॉपर उपलब्ध कराती है।	10–12 कि.ग्रा. प्रति हैक्टेयर गोबर की खाद के साथ मिलाकर। 200 ग्राम प्रति पौधों उद्यानिकी पौधों के लिए।

4 जैव उर्वरकों से लाभ–

1.पादप पोषक तत्वों के नवीनीकरण स्त्रोत है।
2.मृदा स्वास्थ्य बनाये रखते है।
3.रासायनिक उर्वरकों के पूरक रूप में उपयोग
4.25–30 प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों को स्थानांतरित कर सकते है।
5.उपज में 10–40 प्रतिशत तक वृद्धि करते है।
6.पादप अवशेषों को गलाते है तथा मृदा का कार्बनःनाईट्रोजन अनुपात बनाये रखते है।
7.मृदा कणीकरण संरचना तथा जल धारण क्षमता बढ़ाते है।
8.पादप वृद्धि नियामक हार्मोन का स्त्राव करते है जो पादप वृद्धि में सहायक है।
9.फफूंदनाशक तथा एन्टीबायोटीक पदार्थो का स्त्राव करते है।
10. पादप पोषक तत्वों को घोलने तथा उपलब्ध कराने में सहायक ।
11. सस्ते, पर्यावरण प्रिय तथा अप्रदूषक होते है।

5 जैव उर्वरकों का प्रयोग–

(क) बीज उपचार

1.बीजों को उपचार करने हेतू बीजों को साफ फर्श या प्लास्टिक आदि की सीट पर डालकर फैला लें।
2.फैले हुए बीजों पर पानी का छिटका लगायें।
3.गीले बीजों पर जीवाणु खाद का पैकेट खोलकर अच्छी तरह से बीज पर छिड़क दें।
4.उसके बाद हल्के हाथ से बीजों पर जीवाणु खाद रगड़ दें ताकि बीज पर जीवाणु खाद की पर्त चढ़ जाए।
5.उपचारित बीज को शीघ्र बो दें। बुवाई से पहले बीज को छायादार और ठण्डे स्थान पर रखें।

(ख) मृदा उपचार

1.जीवाणु खाद से भूमि का उपचार करने हेतु खेत की 10–20 किलो भूरभूरी मिट्टी या सूखा रेत ले।
2.साफ फर्श या प्लास्टिक सीट पर फैला दें।
3.फैली मिट्टी में आवश्यकतानुसार जीवाणु मिला दें।
4.जीवाणु खाद और मिट्टी को अच्छी तरह मिला ले।
4. मिश्रण को बुवाई से पहले खेत में फैला दें।

(ग) पौध उपचार

यह विधि उन फसलों में प्रयोग की जाती है जिनकी रोपाई पौध द्वारा की जाती है। जैसे–धान, गन्ना व सब्जियों। कल्चर के घोल में जड़ों को लगभग 10–20 मिनट तक डुबोने के बाद रोपाई करें। इसके लिए घोल का अनुपात 1:10 रखना चाहिए। (1 कि.ग्रा. कल्चर व 10 लीटर पानी)

भविष्य में पोषक तत्वों की पूर्ति हेतु जैव उर्वरकों का विशेष महत्व होगा, चूंकि यह कम लागत वाला, हल्का, पर्यावरण अनुकूल व अक्षुण स्त्रोत है। ध ान–गेहू फसल–चक्र में एजोटोबैक्टर एजोस्पीरिलम, नीलहरित शैवाल, एजोला, पी.एस.एम., वी.ए.एम. आदि महत्वपूर्ण है।

धान में नीलहरित शैवाल के 4 कि.ग्रा./एकड़ प्रयोग से 8–12 कि.ग्रा. नत्रजन/एकड़ की उपलब्धि संभव है। एजोला 2–5. 5 टन/एकड़ प्रयोग करके 10–12कि.ग्रा. नत्रजन/एकड़ के समान उपज वृद्धि प्राप्त की जा सकती है। एजोटोबैक्टर/एजोस्पीरिलम द्वारा लगभग 8 कि.ग्रा. नत्रजन/एकड़ उपलब्ध हो सकती है।

इसके अलावा पी.एस.एम. अनुपलब्ध फास्फोरस को उपलब्ध ा रूप में परिवर्तित करते है। चूंकि फास्फोरस उर्वरकों की उपयोग क्षमता कम है। ऐसे में पी.एस.एम. का विशेष महत्व है। वी.ए.एम. फसल की जड़ों के अवशोषण क्षेत्र में वृद्धि करते है तथा तत्वों की उपलब्धता के अतिरिक्त पादप वृद्धि नियामक उत्पन्न करते है।

सरसों की उपयुक्त किस्मों एवं भूमि का चयन तथा खेत की तैयारी

डॉ. अशोक कुमार शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार
सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर, राजस्थान

हमारें देश में राई–सरसों समूह की सात मुख्य फसलें : राई अथवा लाहा, तोरिया, गोभी सरसों, पीली सरसों, भूरी सरसों, करन राई एवं तारामीरा तिलहनी फसल के रूप में उगायी जाती है। इनमें से राई अथवा लाहा, की खेती ही मुख्य रूप से की जाती है। किसानों एवं अन्य हितधारकों में राई अथवा लाहा, को ही सरसों के नाम से जाना जा रहा है।

सरसों भारतीय अर्थव्यवस्था में एक विशेष स्थान है। राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश एवं हरियाणा तथा गुजरात सरसों उत्पादक राज्यों में मुख्य है जिनमें कुल क्षेत्रफल का लगभग 80 प्रतिशत तथा कुल उत्पादन का 84 प्रतिशत भाग आता है। सरसों कृषकों के लिए बहुत लोकप्रिय होती जा रही है क्योंकि इससे कम सिंचाई व लागत में दूसरी फसलों की अपेक्षा अधिक लाभ प्राप्त हो रहा है। इसकी खेती मिश्रित रूप में और दो फसलीय चक्र में आसानी से की जा सकती है। वैज्ञानिक अनुसंधानो से पता चला है कि उन्नतशील सस्य विधियाँ अपना कर 25 से 30 क्विंटल प्रति हैक्टेयर सरसों की पैदावार आसानी से ली जा सकती है।

फसल की उत्पादकता व उत्पादन से किसानों (कृषकों) की आर्थिक स्थिति काफी हद तक प्रभावित होती है । देश की अर्थव्यवस्था पर भी सरसों उत्पादन का खासा प्रभाव पड़ता है । इस परिप्रेक्ष्य में यह वांछित है कि इन फसलों की खेती पूर्ण वैज्ञानिक तरीकों से की जाए व उपलब्ध तकनीकी ज्ञान का भरपूर लाभ उठाया जाए।

सरसों की अधिक पैदावार लेने के लिए सबसे अच्छी किस्म कौन सी है ?

उत्तर – अच्छी फसल लेने के लिए, उचित किस्म का चुनाव एक अति महत्वपूर्ण कदम है। उन्नत किस्मों के विकास का कार्य अखिल भारतीय राई–सरसों समन्वित अनुसंधान परियोजना के अन्तर्गत विभिन्न अनुसंधान केन्द्रों पर उस क्षेत्र के जलवायु के अनुरूप किया जाता है और इन परिक्षणों के के दौरान पाये गये विशेष गुणों के आधार पर विशेष जलवायु तथा उत्पादन परिस्थितियों के लिए चिंहित किया जाता है। जहॉ तक सरसों की सबसे अच्छी किस्म का सवाल है तो कोई भी एक किस्म सभी परिस्थितियों में एक जैसा उत्पादन नहीं देती है। किस्मों कि उत्पादन क्षमता, जलवायु, भूमि, अपनायी गयी वैज्ञानिक तकनीकों आदि कई कारकों पर निर्भर करती हैं। हालांकि पूर्व में विकसित कुछ किस्मों को राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय मानक किस्मों के रूप में चिन्हित किया गया है जिनसे तुलनात्मक अध्ययन के बाद ही नये किस्मों की अनुशंसा की जाती है । सरसों के सिचिंत अवस्था के लिये वरूणा एवं क्रांति राष्ट्रीय मानक किस्म हैं तथा रोहिणी, पूसा जय किसान, पूसा बोल्ड, आर एल 1359, माया तथा वसुन्धरा क्षेत्रीय मानक किस्म हैं ।

प्रश्न : सरसों की किस्मों के चयन के समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर : किसान को अपने क्षेत्र की जलवायु, भूमि का प्रकार, सिंचाई की उपलब्ध ाता, मिट्टी आदि के आधार पर उचित किस्मों का चयन करें चाहिए ताकि सरसों के उत्पादन में वृद्धि करके अधिक लाभ कमा सके।

सरसों यानी भारतीय राई का क्षेत्रफल राई–सरसों की कुल खेती का लगभग 85 प्रतिशत है। अभी तक सरसों के लिए 100 से भी अधिक किस्मों का विकास किया जा चुका है।

सरसों (लाहा) की किस्मों को प्रमुख रूप से अगेति, सामान्य समय व देर से बुवाई वाले सिंचित, बारानी तथा लवणीय व क्षारीय क्षेत्रों में पैदावार के लिए वर्णित किया गया है। किसान भाईयों को भी अपनी मिट्टी की किस्म, सिंचाई की उपलब्धता तथा बुवाई के समय के आधार पर उपयुक्त किस्मों का चयन करना चाहिए। किस्मों की औसत उपज, तेल अंश, परिपक्वता आदि प्राप्त करने के लिए उन्नत तकनीकों को अपनाना आवश्यक है।

इसके साथ ही यह भी धान रखें कि किस्मों की औसत उपज, तेल अंश, परिपक्वता आदि प्राप्त करने के लिए अन्य उन्नत तकनीकों को भी अपनाना आवश्यक है।

आप अपने क्षेत्र मे इन किस्मो की उपलब्धता के आधार पर किस्मो का चयन कर सकते है।

प्रश्न : सरसों की खेती के लिए किस तरह की मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है ?

उत्तरः किसान भाईयों, सरसों की खेती विभिन्न प्रकार की मिट्टी वाली भूमि में की जा सकती है, परन्तु सबसे उपयुक्त भूमि दोमट मिट्टी वाली होती है हालांकि इसकी भरपूर उपज, हल्की दोमट से चिकनी दोमट मिट्टियों तक ली जा सकती है। सरसों की अच्छी पैदावार के लिए जमीन का पी. एच. मान करीब 7 होना चाहिए। अत्याधि ाक अम्लीय एवं क्षारीय मिट्टी इसकी खेती हेतू अच्छी नहीं है। हालांकि यह फसल अन्य फसलों के बनिस्पत हल्की लबणीय भूमि में भी अच्छी पैदावार देती है। क्षारीय भूमि में उपयुक्त किस्म लेकर इसकी खेती की जा सकती है। जहाँ की भूमि लवणीय हो वहाँ पर खेत में पानी भरकर बाहर निकाल देना चाहिए, जिससे लवण पानी के साथ घुल कर बाहर चले जायें । जहाँ की जमीन क्षारीय है वहाँ प्रति तीसरे वर्ष जिप्सम 5 टन प्रति हैक्टेयर की दर से प्रयोग करना चाहिए। जिप्सम की आवश्यकता मृदा पी. एच. मान के अनुसार भिन्न हो सकती है । जिप्सम को मई–जून में जमीन में मिला देना

चाहिए ।

परिस्थिति	उपयुक्त किस्में
पहले हम बात करें सिंचित व समय से बुवाई के लिए कौन सी किस्मे उपयुक्त हैं। इस परिस्थिति के लिये	एन.आर.सी.डी.आर.– 2, पूसा बोल्ड, पूसा जयकिसान (बायो–902), क्रान्ति, लक्ष्मी, वसुंधरा, बसन्ती, जगन्नाथ, रोहिणी, जे एम–2, आर एच–30, जी एम–2, जी एम–3, आर जी एन–73, उर्वषी, माया, आर. एल. एम.–619, आर. सी.सी.–4, पूसा विजय, पूसा मस्टर्ड–21, पूसा मस्टर्ड–22 तथा **संकर सरसों में** (एन. आर. सी. एच. बी. 506), डी एम एच–1 एवं पी.ए.सी.–432 (कोरल) उपयुक्त किस्में हैं।
फिर दूसरी परिस्थिति है बारानी/असिंचित क्षेत्र। इस परिस्थिति के लिये	अरावली, गीता, पी. बी. आर.–91, आर. जी. एन.–48, आर. बी.–50, पूसा बहार उपयुक्त किस्में हैं।
जिन किसानों के यहां लवणीय व क्षारीय भूमि है, उनके लिये	सी. एस.– 54 एवं सी. एस.– 52 उपयुक्त किस्में हैं।
जो किसान भाई अगेती बुवाई करना चाहते है उनके लिये	पूसा अग्रणी (सेज–2), पूसा महक (जे.डी.–6), एन. पी. ज. –112, कांति, नरेन्द्र अगेति राई–4 उपयुक्त किस्में हैं।
इनके अतिरिक्त एक परिस्थिति यह होती है कि किसी कारणवष देर से बुवाई करनी पडती है इस स्थिति के लिये	एन आर सी एच बी 101, नवगोल्ड, आर एन 505, स्वर्ण ज्योति, आर जी एन–145 उपयुक्त किस्में हैं।

प्रश्न : सरसों की खेती के लिए खेत की तैयारी किस तरह करनी चाहिए ?

उत्तरः अधिकतर स्थानों पर सरसों की खेती एक फसलीय पद्धति के रूप में की जाती है जिसमें खरीफ में खेत को खाली छोडा जाता है और रबी मे राई–सरसों की फसल ली जाती है। सरसों की अच्छी पैदावार के लिए ठीक से खेत तैयार करना जरूरी है, ताकि मिट्टी भुरभुरी हो जाए । भूमि तैयारी के वक्त नमी संरक्षण का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भूमि की तैयारी वर्षा ऋतु से ही शुरू हो जाती है। खरपतवार नष्ट करने व नमी संरक्षण के लिए मिट्टी पलटने वाले हल से एक गहरी जुताई करें। इसके बाद हर प्रभावी बारिस के बाद खेत की जुताई करें तथा जुताई के तुरन्त बाद पाटा लगायें। यह नमी संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है। यदि सम्भव हो तो खेत की जुताई शाम के समय करके खुला छोड़ दें ताकि रात्रि में ओस से नमी मिल सके और प्रातः धूप तेज होने से पूर्व ही पाटा चला दें। अन्तिम बारिस के बाद गहरी जुताई कर पाटा लगाकर नमी संरक्षण करें। इससे ज्यादा से ज्यादा वर्षा का पानी मिट्टी में जायेगा और मिट्टी के लवण की कुछ मात्रा भी जड़ क्षेत्र से नीचे चली जाएगी। बुवाई से पहले कल्टीवेटर से दो आड़ी जुताई कर मिट्टी को भुरभुरा बना दें। खेत में ढेलों का होना अवांछनीय है क्योंकि इससे नमी का तेजी से ह्रास होता हैं।

प्रश्न : सिंचित क्षेत्रों में द्विफसलीय पद्धति के अंतर्गत सरसों के खेत की तैयारी कैसे करें ?

उत्तरः सिंचित क्षेत्रों में द्विफसलीय पद्धति के अंतर्गत सरसों बुवाई के लिए भूमि की तैयारी, खरीफ फसलों के कटाई के बाद पलेवा देकर प्रारम्भ करें। पलेवा के बाद 2 या 3 जुताई करें व पाटा लगायें। हर दशा में खेत की मिट्टी को भुरभुरा व समतल बनायें।

किसानो के मेले मे सृष्टी एग्रो

भारत के अनाज निर्यात पर दबाव

गेहूं, मक्का और चावल जैसे अनाज के निर्यात को शुरुआत में अच्छी प्रतिक्रिया मिली थी, लेकिन वर्ष की शेष अवधि के दौरान ज्यादा वैश्विक आपूर्ति और कम कीमत मिलने के अनुमान से देश से निर्यात नरम रहने की संभावना है। कृषि एवं और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) द्वारा जुटाए गए आंकड़ों के मुताबिक चालू वित्त वर्ष के पहले पांच महीनों के दौरान भारत के निजी निर्यातकों और सरकारी एजेंसियों ने 32.9 लाख टन से ज्यादा गेहूं का निर्यात किया है, जबकि पिछले साल की इसी अवधि में गेहूं निर्यात 15.2 लाख टन रहा था। इसी तरह बासमती और गैर-बासमती चावल के निर्यात भी अच्छी बढ़ोतरी हुई है। यह क्रमश: 17.5 लाख टन और 27.6 लाख टन रहा है, जो पिछले साल की इसी अवधि में 15 लाख टन और 25.4 लाख टन रहा था। इसी तरह मक्के सहित अन्य अनाजों का निर्यात भी 19.9 लाख टन से बढ़कर 24.1 लाख टन रहा है। हालांकि यह रुझान आगे जारी नहीं रहने की संभावना है। अखिल भारतीय चावल निर्यातक संघ (एआईआरईए) के अध्यक्ष एम पी जिंदल ने कहा, 'वैश्विक अति आपूर्ति के चलते कीमतें गिर रही हैं, जिससे आगे यह रुझान पलट सकता है।ऽ आपूर्ति बढ? से पिछले एक साल के दौरान अनाज सहित कृषि जिंसों की कीमतें कम से कम 42 फीसदी गिरी हैं। पिछले एक साल के दौरान शिकागो बोर्ड ऑफ ट्रेड में गेहूं और मक्के का नजदीकी महीने का अनुबंध क्रमश: 33.48 फीसदी और ४०.६७ फीसदी गिरकर ९ डॉलर प्रति बुशल और 4.41 डॉलर प्रति बुशल पर आ गया है। हालांकि चावल में केवल 2.23

फीसदी गिरावट आई है और यह 15.13 डॉलर प्रति 100 पौंड है। वैश्विक कीमतों में गिरावट से भारत के अनाज निर्यात के लिए संभावनाएं सीमित हो गई हैं। जिंदल का अनुमान है कि इस साल भारत का अनाज निर्यात १५ से 20 फीसदी घटेगा। संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) ने अपनी हाल की रिपोर्ट में अनुमान जताया है कि वैश्विक अनाज उत्पादन चालू वर्ष के विपणन सत्र (जुलाई-जून) में 7.7 फीसदी बढ़कर 248.91 करोड़ टन रहेगा, जो पिछले साल 231.17 करोड़ टन रहा था। इससे भी अनाज की वैश्विक कीमतों पर दबाव बढ़ा है। वहीं, अनाज की वैश्विक खपत ३.३ फीसदी बढ़कर 241.55 करोड़ रह सकती है। इससे वैश्विक स्तर पर २०१३-१४ के दौरान अनाज का स्टॉक 12.4 फीसदी बढ़कर 55.89 करोड़ टन हो जाएगा, जो पिछले साल 49.73 करोड़ टन था। एपीडा के सलाहकार ए के गुप्ता ने कहा, 'इस साल गेहूं और मक्के के निर्यात में गिरावट आ सकती है, लेकिन इसकी भरपाई बासमती चावल के निर्यात से हो जाएगी। इसलिए मूल्य लिहाज से अनाज का कुल निर्यात पिछले साल जितना ही रहेगा।ऽ हम यह मानें कि अनाज निर्यात से आमदनी पिछले साल जितनी रहेगी तो डॉलर के मुकाबले रुपये में गिरावट के अनुपात में निर्यातित मात्रा में भी कमी आएगी। इस साल भारत से बासमती चावल का निर्यात बढ़॰कर 40 लाख टन हो सकता है

टेक्समो पाइप एंड प्रोडक्ट लिमिटेड ने किया तकनिकी प्रोडक्ट का शुभारंभ

मुम्बई टेक्समो पाइप एंड प्रोडक्ट कंपनी लिमिटेड कंपनी के सीनियर अधिकारी रोहन ने उत्पादों कि जानकारी देते हुए बताया कि टेक्समो के उत्पाद PVC PIPE ,HDE PIPE ,DRIP ERIEEGATION ,SECTION HOSE PIPE Skeb PLUMBING S और AGRI FITTING कि विस्कृत रेंज के साथ भारत में १२ राज्यों में अपने उत्पाद प्रदान कराती है।

इसके अतिरिक्त टेक्समो राष्ट्रिय एवं बहुराष्ट्रिय कार्पोरेट कंपनी जैसे IDEA , BSNL ,RELIANCE , L & T ,KIRLOSKAR ,SEMEN'S इत्यादि कम्पनियों को अपना प्रोडक्ट उपलब्ध कराती है ।

रोहन ने यह भी बताया कि कंपनी का नया प्रोडक्ट लाया जा रहा है CPVC PIPE AND FITTINGS इसकी यह विशेषता है कि गरम और ठन्डे पानी में टेम्प्रेचर के लिए पूर्णता कार्यसर हैं इसका उपयोग +100 % - 100 % डिग्री गरम एवं ठन्डे पानी के लाने और लेजाने में आराम से किया जा सकता है।

किसानों की हमदर्द बनी - राज बोरेक्स

मुम्बई किसानों को गुणवत्तापूर्ण अधिक उत्पाद मिले इसके लिए राज बोरेक्स कंपनी कई वर्षो से कार्य कर रही है कंपनी के शर्मा ने सृष्टि एग्रो को एक विशेष भेट में बताया कि उनके उत्पाद ChEMLEBOR एवं ARICOLed का उपयोग करने से किसानों को फसल में ब्रद्धी होगी है तथा उन्हके उत्पाद का केमिकल प्रभाव नहीं है।

शर्मा ने यह भी बताया कि , कंपनी का नेटवर्क संपूर्ण भारत में फैला हुआ है , तथा राज बोरेक्स अपने मौजूदा उत्पादों व् सेवाओं के साथ पूरे देश में लीडर बनाने के लिए तयार है ,उन्हका फोकस इकोफ्रेंडली समाधानों पर है ,जिनसे फसलों का नुकसान रुके और पर्यावरण कि रक्षा हो सके .

एथनॉल बिक्री से चीनी मिलों को राहत की आस

चीनी के कम भाव होने के कारण मिलों के सामने वित्तीय कठिनाई चीनी के काफी नीचे भाव होने के कारण वित्तीय कठिनाई के दौर से गुजर रही चीनी मिलें गन्ने की पेराई करके एथनॉल का उत्पादन करके कुछ राहत पाने की कोशिश कर रहे हैं। सरकार क्रूड ऑयल आयात का खर्च घटाने के लिए ऑयल मार्केटिंग कंपनियों पर बायोफ्यूल का मिश्रण करने के लिए दबाव बना रही है। क्रूड ऑयल के आयात पर हर साल करीब २० अरब डॉलर से भी ज्यादा विदेशी मुद्रा खर्च हो रही है।

इससे सरकार का करेंट एकाउंट डेफिशिट (सीएडी) रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच चुका है। अगर सरकार अपने लक्ष्य के अनुसार पेट्रोल में पांच फीसदी एथनॉल का मिश्रण करने का अभियान पूरा कर पाती है तो उसे एक अरब डॉलर की बचत हो सकती है। सरकार ने छह साल पहले एथनॉल का मिश्रण करने की शुरूआत की थी। यह लक्ष्य वर्ष २०१३-१४ तक हासिल होता है तो चीनी मिलों को अपनी आय सुधारने में मदद मिल सकती है। भारत चीनी उत्पादन में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। लेकिन यहां के उत्पादन में बार-बार भारी उतार-चढ़ाव आता है। भारतीय मिलें चीनी उत्पादन के बाय-प्रोडक्ट के रूप में शीरे का उत्पादन करती हैं। अगर इसका उत्पादन बढ़ता है तो चीनी के उत्पादन में स्थिरता आएगी। इससे भारत में चीनी के आयात और निर्यात की स्थिति बार-बार नहीं बदलेगी। मुंबई स्थित आईसीआईसीआई डायरेक्टर के एनालिस्ट संजय मन्याल ने कहा कि तेल कंपनियों ने गन्ने का पेराई सीजन शुरू होने से पहले एथनॉल खरीद के लिए टेंडर जारी किए हैं। इस साल एथनॉल के मूल्य को लेकर भी कोई विवाद नहीं है। इस साल पांच फीसदी एथनॉल मिश्रण का लक्ष्य इस साल हासिल किया जा सकता है। प्राइवेट फर्म एथनॉल इंडिया के चीफ कंसल्टेंट दीपक देसाई का कहना है कि तेल कंपनियों को पिछले साल से ज्यादा एथनॉल मूल्य देने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए क्योंकि उन्हें क्रूड ऑयल कहीं ज्यादा मूल्य पर आयात करना पड़ रहा है। पिछले टेंडर के अनुसार मिलें ३८ रुपये प्रति लीटर के मूल्य पर एथनॉल की सप्लाई कर रही हैं। जबकि आयातित पेट्रोल ४६ रुपये प्रति लीटर पड़ रहा है

त्योहारी मांग से भी नहीं बढ़ेंगे इलायची के दाम

इलायची की पैदावार बढने की संभावना से भाव पर दबाव रहने के आसार सदिऱ्यों के साथ ही त्योहारी मांग से इलायची की खपत में तो बढ़ोतरी होगी लेकिन पैदावार ज्यादा होने से कीमतों में तेजी की संभावना नहीं है। चालू सीजन में इलायची की पैदावार करीब 22 फीसदी बढ़कर लगभग 21,000-22,000 ङ्कन होने का अनुमान है। उधर, ग्वाटेमाला में भी नई इलायची की आवक शुरू हो गई है तथा पैदावार पिछले साल से ज्यादा ही होने का अनुमान है। स्मैक्स एजेंसी के मैनेजिंग डायरेक्टर मूलराज भीमजी रुबारल ने बताया कि चालू सीजन में इलायची

की पैदावार बढ़कर 21,000-22,000 टन होने का अनुमान है जबकि पिछले साल पैदावार 18,000 टन की हुई थी। उत्पादक क्षेत्रों में इलायची की तीसरी तुड़ाई शुरू होने वाली है, जिससे बोल्ड क्वालिटी (8 से 8.5 एमएम) के मालों की आवक ज्यादा होगी। इस समय साप्ताहिक आवक बढ़कर चार से पांच लाख किलो की हो गई है तथा नीलामी केंद्रों पर इलायची के भाव 586 से 785 रुपये प्रति किलो चल रहे हैं। अग्रवाल स्पाइस के प्रबंधक अरुण अग्रवाल ने बताया कि चालू वित्त वर्ष 2013-14 के पहले छह महीनों (अप्रैल से सितंबर) के दौरान करीब २,२०० टन इलायची का निर्यात हो चुका है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारतीय इलायची के दाम 9 से 14.5 डॉलर प्रति किलो चल रहे हैं जबकि ग्वाटेमाला की इलायची का भाव 4 से 13 डॉलर प्रति किलो है। भारत के मुकाबले ग्वाटेमाला की इलायची की क्वालिटी हल्की है इसलिए भारत से निर्यात मांग अच्छी है। त्योहारी सीजन शुरू होने के कारण घरेलू मांग भी अच्छी बनी हुई है, लेकिन उपलब्धता ज्यादा होने से कीमतों में तेजी की संभावना नहीं है। उधर, ग्वाटेमाला में नई फसल की आवक शुरू हो गई है निर्यात नवंबर-दिसंबर डिलीवरी के सौदे कर रहे हैं। ग्वाटेमाला में इलायची की पैदावार बढ़कर 33,000-34,000 टन होने का अनुमान है। इलायची के थोक कारोबारी अशोक पारिख ने बताया कि इलायची की घरेलू खपत सालाना लगभग 14,000 टन की होती है जबकि चालू वित्त वर्ष 2013-14 में करीब 4,000 टन निर्यात होने का अनुमान है। ऐसे में नई फसल के समय करीब 3,000-4,000 टन इलायची का बकाया स्टॉक बच जायेगा। उन्होंने बताया कि चौथी तुड़ाई में बोल्ड मालों की आवक ज्यादा रहेगी तथा त्योहारी सीजन शुरू होने से मसाला निर्माताओं की मांग भी बढ़ेगी, इससे कीमतों में हल्का सुधार तो सकता है लेकिन तेजी नहीं। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर महीने भर में इलायची की कीमतों में 8.8 फीसदी की गिरावट आ चुकी है। 12 सितंबर को नवंबर महीने के वायदा अनुबंध में इलायची का भाव 810 रुपये प्रति किलो था जबकि शनिवार को भाव घटकर 738 रुपये प्रति किलो रह गया।

स्वरुप एग्रो केमिकल इंडस्ट्री कृषि उत्पाद में उभरता नाम ...

नासिक स्वरुप एग्रो केमिकल इंडस्ट्री के एम् .डी. समीर आर. पाठारे एक विशेष भेट में सृष्टि एग्रो को बताया कि उनके उत्पाद मल्टी एक्टिविटी बायो आर्गेनिक ,प्लांट बायो एंजेंस,मक्रोन्यूट्रॉन एवं स्पेशलिटी एग्रो केमिकल इत्यादि उत्पाद का उपयोग करने में फसल में वृदि ,पौदे कि उपज के लिए उनके उत्पाद किसानों के लिए कारगर साबित हुए कंपनी का डीलर नेटवर्क १२ राज्यों में है और कंपनी के उत्पाद अंतराष्ट्रीय स्तर पर निर्यात हो रहे है ।

कंपनी का लक्ष केमिकल रहित एवं भूमि कि उपजाऊ शक्ति को बढ़ाना है इसी के साथ उन्होंने बताया कि कंपनी पूरे देश में ग्रोथ कर रही है कंपनी नवीनतम तकनीकी का शीघ्र विस्तार कर रही है और कहा कि स्वरुप एग्रो केमिकल इंडस्ट्री के प्रोडक्ट अधिक नफा व् उत्पादकता बढ़ाने वाले है ,यह कंपनी गुणवत्ता में ही पूर्ण विश्वास रखती हैं कंपनी के अन्य उत्पाद के बारे में भी जानकारी दी और कहा स्वरुप एग्रो इंडस्ट्री सम्रद्धी व् विश्वास का प्रतीक है।

एक सपने की उड़ान सोनालिका

अपनी पीढ़ी के प्रथम व्यवसाई एवं पंजाब प्रान्त के एक सामान्य अनाज विक्रेता के पुत्र और5000 रुपये करोड़ रुपये के स्वामित्व वाली सोनालिका ग्रुप के अध्यक्ष श्री एल डी मित्तल का शुरू से ही विश्वास था कही और नौकरी करने कि बजाय दूसरो के लिए रोज़गार के अवसर पैदा करो .

इस वर्ष ही सितम्बर में अंतराष्ट्रीय बिज़नस पत्रिका फोर्ब्स ने श्री एल डी मित्तल को 100 भारतीय करोड़पति की सूची में ७५वा स्थान प्रदान किया हे भारत में वे सबसे धनी ट्रेक्टर उत्पादको में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते हे जिसकी कुल लागत 3925 करोड़ आंकी गयी हे ! 1990 में कृषि एवं खेतीबाड़ी के उपकरणों के अपने पैतृक व्यवसाय से जुड़ने से पहले उन्होंने भारतीय जीवन बीमा निगम में कार्य किया! सोनालिका ग्रुप का भारत में प्रथम तीन ट्रेक्टर उत्पादको में स्थान बरकरार हे जो कि अपनी वृहद उत्पाद श्रृंखला ट्रेक्टर , बहुउद्देशीय

उपयोगी वाहन , इंजन , खेतीबाड़ी के काम आने वाली मशीने एवं उपकरण डीज़ल जेनसेट एवं क्रेन मशीनो द्वारा जाना जाता हे ७० से अधिक देशो में अपने उत्पादों को निर्यात करने वाली सोनालिका ग्रुप के अध्यक्ष श्री एल डी मित्तल का दिन प्रतिदिन के कार्यों में उनके दो पुत्र श्री अमित एवं श्री दीपक सागर अपना महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करते हे ! सोनालिका ग्रुप 2500 रुपये के सालाना टर्नओवर एवं 10 % कि घरेलु मार्किट में हिस्सेदारी के साथ फोर्ब्स पत्रिका कि सूची में अग्रणी बना हुआ हे

सोनालिका एक विशेष प्रकार का गेहू बीज जिसने 1970 कि हरित क्रांति में के महत्वपूर्ण किरदार निभाया एवं इसे अपनाने के बाद भौगोलिक रूप से बाज़ार में इसके परिणाम बेहतर गेहू उत्पादन क साथ नज़र आने लगे सोनालिका नाम के भावार्थ में जाये तो इसका उद्भव हुआ ' सोने की लकीरें' नामक वाक्यांश से इसी से प्रेरित हुआ भारत का अनाज मार्किट और फलस्वरूप देश कि घरेलु पूर्ति के साथ ही भारत अनाज निर्यात करने वाला देश बन पाया !

सफलता का स्वाद लेते हुए आज सोनालिका एक ऐसे स्तर जा पहुंचा जहा 30 % वार्षिक वृद्धि के साथ लगभग 3000 करोड़ का टर्नओवर हे ! सबसे ख़ास बात यह रही कि बिना किसी देनदारी के आज विश्व की कुछ गिनी चुनी कम्पनियो में शुमार हे ,जापान कि यांमार एवं जे एम् फाइनेंस तःथा मैग्मा शरची फाइनेंस के साथ हाथ मिला ये कंपनी अच्छा प्रदर्शन कर रही हे

सोनालिका के एक हिस्से वाली कंपनी इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड प्रभावशाली रूप से ट्रैक्टर्स का उत्पादन कर रही हे यहाँ 20 एच पी से लेकर 90 एच पी क्षमता वाले ट्रैक्टर्स का उत्पादन होता हे.

श्री एल डी मित्तल के कुशल प्रबंधन में कंपनी का लक्ष्य विश्व कि अग्रणी ट्रेक्टर कंपनी बनने के साथ अपने ग्राहको को उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद उचित मूल्यो में उपलब्ध कराने का हे

1975 में पंजाब के होशियारपुर से कृषि उपकरणों कि एक फैक्ट्री से शुरआत करने वाले श्री एल डी मित्तल विश्व के नाम क़ी ट्रेक्टर उत्पादन कंपनी के स्वामी है.

ये श्री एल डी मित्तल के सपने की उड़ान ही तो हे.

जयदीप माथुर

एस्पी के स्प्रेयर पंप छिड़कवों में कारगर

मुम्बई .एस्पी एक स्प्रेयर पंप में अग्रणी कंपनी है ,तथा कम्पनी का मुख्यालय मुम्बई में स्थित है उनके उत्पाद सभी राज्यो में फैले हुए है हमारे संवाददाता ने एस्पी के अधिकारी प्रजापति से बातचीत मंड पाया गया कि ,कंपनी का लक्ष उच्च कोटि के कृषि के विभिन्न अत्याधुनिक औज़ार उप लब्ध कराना एवं गांव गांव तक एस्पी के उत्पाद पहुंचाना है । एस्पी के प्रमुख उत्पाद नेपसॅक ,स्प्रेयर, पावर स्प्रेयर, ट्रेक्टर स्प्रेयर ,फोगिन मशीन,ब्रश कटर इत्यादि किसानों के लिए कारगर साबित हुए ।

आलू के प्रमुख रोग एवं उनके प्रबंधन

शरद शराफ

आलू सब्जियों की मुख्य फसल है इसकी खेती भारत मे प्रमुख फसल के रूप से ली जाती है परन्तु रोगों के कारण इसकी खेती प्रभावीत हो रही हैं किसानो को ६०-७० प्रतिशत तक नुकसान उठाना पड़ रहा है इस तरह के नुकसान से बचने के लिए की किसानों को आलू के प्रमुख रोगों एवं उनके उचित प्रबंधन की जानकारी आवश्यक है इस लेख का प्रमुख उद्देश्य किसानों को आलू के प्रमुख रोगों के लक्षणों कि जानकारी देना हैं ताकी वे उसे पहचान कर उस रोग का उचित प्रबंधन कर सकें।

अगेती अंगमारी या अर्ली ब्लाइट

यह रोंग फफूंद की वजह से होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण नीचे की पत्तियों पर हल्के भरे रंग के छोटे- छोटे पूरी तरह बिखरे हुए धब्बों से होता हैं। जो अनुकूल मौंसम पाकर पत्तियों पर फैलने लगते है। जिससे पत्तियॉ नष्ट हो जाती है । इस बिमारी के लक्षण आलू मे भी दिखते हैं भूरे रंग के धब्बें जो बाद मे फैंल जाते हैं जिससे आलू खाने योग्य नही रहता है।

प्रबंधन:-

- बुवाई से पूर्व खेत की सफाई कर पौंधों के अवशेशो को एकत्र कर जला देना चाहिए।
- आलू के कंदो को एगेलाल के ०.१ प्रतिशत घोल में २ मिंनट तक डुबाकर उपचारित करके बोना चाहिए।
- रोग प्रतिरोधक जाति जैसे कुफरी जीवन, कुफरी सिंदूरी आदि।
- फाइटोलान, ब्लिटाक्स- ५० का ०.३ प्रतिशत १२ से १५ दिन के अन्तराल में ३ बार छिड़काव करना चाहिए।

पछेती अंगमारी रोंग

यह रोंग फफूंद की वजह से होता है। रोग के लक्षण सबसे पहले निचे की पत्तियों पर हल्कें हरे रंग के धब्बें दिखई देतें है जो जल्द ही भूरे रंग के हो जाते हैं। यह धब्बें अनियमित आकार के बनते हैं। जो अनुकूल मौसम पाकर बड़ी तीव्रता से फैलते हैं औंर पत्तियों को नश्ट कर देतें है। रोग की विशेश पहचान पत्तियों के किनारें और चोटी भाग का भूरा होकर झुलस जाना हैं। इस रोग के लक्षण कंदो पर भी दिखइ पड़ता है। जिससे उनका विगलन होने लगता हैं।

प्रबंधन:-

- बुवाई के पूर्व खोद के लिकाले गए रोगी कंदो को जलाकर नश्ट कर देना चाहिए।
- प्रमाणीत बीज का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- रोग प्रतिरोधी जातीयों का चयन किया जाना चाहिए जैसे कुफरी अंलकार, कुफरी खासी गोरी, कुफरी ज्योती, आदि।
- बोर्डो मिश्रण ४:४:५०, कॉपर ऑक्सी क्लोराइड का ०.३ प्रतिशत का छिड़काव १२-१५ दिन के अन्तराल मे तीन बार किया जाना चाहिए।

भूरा विगलन रोग एवं जीवाणु म्लानी रोग

यह जिवाणु जनित रोग हैं। रोग ग्रसित पौधे सामान्य पौधो से बौने होते है। जो कुछ ही समय मे हरे के हरे ही मुरझा जाते है। प्रभावित पौधों की जड़ो को काटकर कॉच के गिलास मे साफ पानी में रखने से जीवाणु रिसाव स्पश्ट देखा जा सकता हैं। अगर इन पौधो मे कंद बनता है तो काटने पर एक भूरा धेरा देखा जा सकता हैं।

प्रबंधन:-

- गृष्मकालिन गहरी जुताई किया जाना चाहिए ।
- प्रमाणीत बीज का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- बुवाई के पूर्व खोद के लिकाले गए रोगी कंदो को जलाकर नश्ट कर देना चाहिए।
- कंद लगाते समय ४-५ किलो ग्राम प्रति एकड़ की दर से ब्लीचिंग पाउडर उर्वरक के साथ कुंड मे मिलायें।
- रोग दिखई देने पर अमोनियम सल्फेट के रूप मे देना चाहिए जो रोग जनक पर विपरीत प्रभाव डालते हैं।

काला मस्सा रोग

यह रोंग फफूंद की वजह से होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण पौधो कंदो पर पर दिखाई पड़ता हैं। जिसमे भूरे से काले रंग के मस्सो की तरह उभार दिखाई देते है जिससे कंद खाने योग्य नही रह जाता हैं।

प्रबंधन:-

- प्रमाणीत बीज का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- बुवाई के पूर्व खोद के लिकाले गए रोगी कंदो को जलाकर नश्ट कर देना चाहिए।
- प्रतिरोधक जातियो का प्रयोग किया जाना चाहिए।

समान्य स्कैब या स्कैब रोग

रोंग फफूंद की वजह से होता है। इस रोग के प्रमुख लक्षण पौधो कंदो पर पर दिखाई पड़ता हैं। कंदो मे हल्के भूरे रंग के दिखई फोड़े के समान स्केब पड़ते है जो की कुछ उभरे और कुछ गहरे स्केब दिखई पड़ते है जिसके कारण कंद खने योग्य नही रह जाते।

प्रबंधन:-

- प्रमाणीत बीज का प्रयोग किया जाना चाहिए ।
- बुवाई के पूर्व खोद के लिकाले गए रोगी कंदो को जलाकर नश्ट कर देना चाहिए।
- बीज को आरगेनोमरक्यूरीयल जैसे इमेशान या एगालाल धोल के ०.२५ प्रतिशत धोल मे ५ मिनट तक उपचारीत करें।

गेहूँ की मौसम आधारित वैज्ञानिक खेती

डा0 पद्माकर त्रिपाठी, अरविन्द कुमार एवं डा0 ए0के0 सिंह

कृशि मौसम विज्ञान विभाग, न0दे0 कृशि एवं प्रौ0 वि0वि0 फैजाबाद (उ0प्र0)

उत्तर प्रदेष मे लगभग 29 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल मे गेहूँ की खेती होती है। उत्पादन की दृश्टि से भारत में उत्तर प्रदेष का पहला स्थान है, परन्तु औसत उत्पादन मात्र 27.97 कु./हेक्टेयर है। देष की उत्तरोत्तर बढ़ती जनसंख्या को ध्यान में रखते हुए प्रदेष में गेहूँ के उत्पादन को बढ़ाने की बहुत सम्भावनाएँ है। यदि कृशक संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, खरपतवारों का नियन्त्रण, उचित फसल सुरक्षा की ओर ध्यान दें तो गेहूँ का उत्पादन बढ़ा सकते हैं। वैसे तो गेहूँ की खेती विभिन्न प्रकार की भूमियों में की जा सकती है, लेकिन चिकनी दोमट, अच्छी संरचना, मध्यम जलधारण क्षमता वाली भूमि गेहूँ की खेती के लिए सर्वोतम मानी जाती है। स्थानीय परिस्थितियों जैसे जलवायु, सिंचाई के साधन तथा बुवाई की अनुकूलता के आधार पर गेहूँ की असिंचित दषा में यू0पी0.2338, पी.बी.175, के0 78, के0 9465 ;गोमतीद्ध, के0 8027 ;इन्द्राद्ध, सी. 306 ;सुजाताद्ध, एच.डी.आर.77, सिंचित दषा में समय से वुवाई करने हेतु यू.पी. 2382, यू.पी. 2003, डी.एम. 1734 ;राजलक्ष्मीद्ध, के0 9107 ;उजियारद्ध, एन.डब्ल्यू 1012, एच.पी 1761, एच.यू. डब्ल्यू.468, एच.डी.0733, पी.बी.डब्ल्यू 502, डी.बी.डब्ल्यू 17, पी.बी.डब्ल्यू 443 प्रजातियाँ संस्तुत की गयी हैं। सिंचित दषा में बिलम्व से वुवाई के लिए एच.डी.2285, एच.पी.1209, मालवीय 234, एच.पी. 1633 ;सोनालीद्ध, एच.पी. 1744, एन.डब्ल्यू.1014 ;नरेन्द्रद्ध, के. 8020. ;त्रिवेणीद्ध. एच.डी.2643 ;गंगाद्ध, यू.पी.2425, के. 9162 गंगोत्री, पी.बी.डब्ल्यू.373, पी.बी.डब्ल्यू.509, राज. 3765, पी.बी.डब्ल्यू.154 जबकि ऊसरीली भूमि हेतु के.आर. एल 1–4, राज. 3077, लोक 1, पी.बी.डब्ल्यू–65, के.आर. एल.19, के. 8434;प्रसाद) उपयुक्त प्रजातियां हैं।

गेहूँ की बुवाई अधिकतर धान के बाद की जाती है, अतः भारी भूमि को पहले मिट्टी पलटने वाले हल से जुताई के बाद डिस्क हैरो से दो बार जुताई करके मिट्टी को भुरभुरी बनाकर बुवाई करना उचित है। धान की ठूंठ को जल्दी सड़ाने के उद्देश्य से 15–20 किग्रा0 यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से पहली जुताई में प्रयोग करें। ताकि गेहूँ की शुरूआती दौर में नत्रजन की कमी न हो।

गेहूँ की बुवाई निर्धारित समय पर पर्याप्त नमी की दशा में किया जाना चाहिए। उन्नतशील प्रजातियों को 4–5 सेंमी0 की गहराई पर तथा बिलम्बित दशा में 4 सेंमी0 की गहराई पर ही बुवाई करना चाहिए। दिसम्बर में बुवाई करने पर फूल आने के समय तापमान में बृद्धि के परिणामस्वरूप गेहूँ की पैदावार 3 से 4 कुन्तल जबकि जनवरी में बुवाई करने पर 4 से 5 कुन्तल प्रति सप्ताह की दर से कमी आती है। समय से बुवाई हेतु 100 किग्रा ध्हे0 तथा विलम्ब से बुवाई हेतु 120 किग्रा ध्हे0 बीज की आवश्यकता होती है।

गेहूँ की फसल से अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि खेत को बुवाई के 40–50 दिन के पहले खरपतवारों से मुक्त कर दिया जाय। चौड़ी पत्ती के खरपतवारों का रासायनिक नियंत्रण 2,4–डी सोडियम साल्ट 80 प्रतिशत डबलू0 पी0 625 ग्राम का प्रयोग 800–100 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 30–40 दिन के अन्दर लैटफैन नाजिल से खड़ी फसल में छिड़काव कर देना चाहिए। संकरी पत्ती जैसे गेहूँसा व जंगली जई के रासायनिक नियंत्रण हेतु आइसोप्रोट्यूरान 50ध्75 प्रतिशत की 2.00ध्1.25 किग्रा मात्रा प्रति हेक्टेयर उपर्युक्त विधि से बुवाई के 20–30 दिन के भीतर करनी चाहिए। जिन खेतों में चौड़ी व संकरी पत्ती वाले खरपतपार को नियंत्रित करना हो वहाँ 2–4, डी व आइसोप्रोट्यूरान को एक साथ मिलाकर प्रयोग करना चाहिए।

गेहूँ की फसल में करनाल बन्ट रोग से ग्रसित दाने आंशिक रूप से काले चूर्ण मे बदल जाते है जिसे बीज शोधन कर नियंत्रित किया जा सकता है, खड़ी फसल मे रोग नियंत्रण हेतु 2 किग्रा. मैंकोजेब प्रति हेक्टेयर 1000 लीटर पानी मे घोलकर छिड़काव करने से बालियों में दाने के स्थान पर काला चूर्ण बन जाता है। 2.5 ग्राम प्रति किग्रा. की दर से कार्बेन्डाजिम अथवा कार्बाक्सीन से बीजशोधन कर बुवाई करनी चाहिए। खड़ी फसल में झुलसा व गेरूई रोगों की रोकथाम जिनेब 75 प्रतिशत 2.5 किग्रा, मैकोजेब 2.00 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग कर बचाया जा सकता है। इस तरह से गेहूँ की मौसम आधारित वैज्ञानिक खेती करके किसान भाई अधिकतम् उत्पादन प्राप्त कर सरके हैं।

कुदरती हरी साग–सब्जियॉः सुरक्षित पर्यावरण

कु0 मधु', उमा वर्मा'' एवम डा0 सिया राम विश्वकर्मा'''

बेहतर आहार (अनाज, दालें साग–सब्जी, खाद्यान आदि) हमारे स्वास्थ्य की पहली शर्त है। वर्तमान वैश्वीकरण के इस दौर में स्वस्थ और फिट रहना आज का अहम प्रश्न है। क्योंकि बदलते परिवेश में खान–पान की दिनचर्या बदल गयी है। व्यक्ति समय के अभाव में जो मिलता है, खा लेता है। नतीजा बीमारियों में बृद्धि हुई है और व्यक्ति का कार्य प्रभावित हो रहा है। आज हरी साग–सब्जियों में हरापन, रंगों का स्थाईत्व रखने के लिए तमाम कीटनाशकों व कृत्रिम रंगों का प्रयोग हो रहा है जो स्वास्थ्य समस्या में एक चुनौती बन रहा है। अतः खान पान में नियन्त्रण, सब्जियों के खरीददारी करते समय अति सावधानी, मौसमी ताजे सब्जियों को ही अपनाने जैस समन्वय हमें बीमारियों से बचा सकते है।

लगभग सभी डायटीशियंस इस बात पर एकमत है कि यदि हम अपने खान पान में अधिक से अधिक कुदरती बहुरंगी खाद्य पदार्थो को शामिल करे तो इससे हम सभी के स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण सुधार होगा। दुनियाभर के आहार विशेषज्ञ इस बात से सहमत है कि प्रत्येक रंग के खाद्य पदार्थ में अलग–अलग प्रकार के पोषक तत्व पाये जाते है। विभिन्न रंगो व पोषक तत्वों के मध्य सीधा सम्बन्ध है जैसे लाल टमाटर में विटामिन ए और एन्टी आक्सीडेन्टस (रोग रक्षक व जीवन रक्षक तत्व) पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है। जापानियों का विश्वास है कि प्रतिदिन 25 अलग अलग रंगो के खाद्य पदार्थ को आहार में स्थान देने पर कैंसर व ह्रदय रोगों से बचाव होता है।

बस्तुतः फलों–सब्जियों में जो कुदरती रंग पाये जाते है, वे फाइटोकेमिकल्स के कारण होते है। इन फलों सब्जियों का रंग जितना गहरा होगा, उतनी ही मात्रा में इनमें पोषक तत्वों के साथ–साथ रोगों से लड़ने वाले रंग तत्व भी मिलेंगे। विभिन्न रंगों के फलों व सब्जियों में जो विटामिन्स , मिनरल्स और अन्य पोषक तत्व पाये जाते है, वे शरीर के अन्दर पैदा होने वाले नुकसान देह तत्वों (फ्रीरेडिकल्स) के दुष्प्रभावों को कम करते हैं। इसका कारण यह है कि बहुरंगी फलों/सब्जियों में एंटी आक्सिडेन्टस पर्याप्त मात्रा में पाये जाते है।

हरी सब्जियां न केवल रेशे (फाइबर) का अच्छा स्रोत होती है, बल्कि वजन नियन्त्रित रखते हुए शरीर की विटामिन्स ए, सी, के, फोलेट (आयरन) और कैल्शियम की कभी भी पूरी करती है। साथ ही कई बीमारियों के खतरे से बचाती है।

' पीएच0 डी0 रिसर्च स्कालर (फूडन्यूट्रिशन) '' परास्नातक छात्रा (पादप प्रजनन), '''वरिष्ठ पौध अभिजनक, आनुवंशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, फैजाबाद–224 229 (उत्तर प्रदेश)

1. पत्तेदार सब्जियॉः

पालक, मेथी, बथुआ, मूली व सरसों में मिनरल्स और विटामिन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। मेथी में कैलशियम की मात्रा बहुत ज्यादा होती है। यह हड्डियों को मजबूत बनाती है। साथ ही याददाश्त को बढ़ाने में मददगार होती है। इसके सेवन से पाचन दुरुस्त रहता है। पालक में मौजूद लौह तत्व हिमोग्लोबिन बढ़ता है। यह आंखों के लिए भी फायदे मन्द है। पथरी के रोगियों को पालक कम खाना चाहिए।

पत्तेदार सब्जियों में एन्टी आक्सिडेन्ट होते है, जो प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करते है। और कैंसर से भी बचाते है। इनके सेवन से इन्सुलिन की मात्रा नियंत्रित रहती है जिससे डायबिटीज का खतरा भी टलता है।

2. टमाटरः

इसमें लाइकोपिन, इलेगिक एसिड और हेस्पिरीडीन सरीखे पोषक तत्व होंते है। ये पदार्थ शरीर में प्रोस्टेट कैंसर, रक्तचाप के खतरे को कम कर देते है। साथ ही टयूमर बनने और कोलेस्ट्राल का स्तर बढ़ने नही देते। इसमें विटामिन सी भी पाया जाता है जो शरीर के प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है। टमाटर में एन्टीएजिंग तत्व पाये जाते है जिसके कारण त्वचा में मौजूद फ्रीरेडिकल्स की संख्या को कम करता है। टमाटर शरीर में नमी की मात्रा को संरक्षित रखता है।

3. गाजरः

इसमें विटामिन ए, बी, सी, कैल्शियम और फाइवर होते है जो कोलेस्ट्राल स्तर को बढने नही देते है। गाजर का जूस त्वचा को साफ करता है जिससे चेहरे पर चमक आती है, सर्दी जुकाम नही होता है। थकान व तनाव कम हो जाता है। गाजर का जूस हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट कर देता है जिससे डायरिया नही होता है। इससे प्रतिरक्षा तन्त्र मजबूत होता है। गाजर का रस पीने से याददाशत तेज होती है।

4. ब्रोकली/गोभीः

फूल गोभी में फोलिक एसिड पाया जाता है जो महिलाओं के लिए फायदेमन्द होता है। जहॉ पत्तागोभी खाने से ताजगी, विटामिन्स फाइबर की प्राप्ति व सुपाच्यता प्राप्त होती है, वही ब्रोकली गोभी (हल्के नीले रंग वाला) कई बीमारियों में कारगर सिद्ध हुआ है। यह देखा गया है कि ब्रोकली का प्रयोग पेट सम्बन्धी रोग, डायबिटीज व कैंसर के रोगियों पर लाभदायक प्रभाव छोडता है। ब्रोकली से कैंसर में ज्यादा लाभ होता क्योंकि इसमें सल्फोरोफेन नामक रासायनिक तत्व मौजूद होता है। बंद गोभी में ल्यूटिन, जिओजेंथिन, विटामिन सी, फाइबर लोवानायड आदि पोषक तत्व पाये जाते है।

5. लौकीः

अति सुपाच्य लौकी का गुण किससे छुपा हुआ है। कड्वी लौकी को छोड़कर इसमें ऐसे तत्व पाये जाते है जो हृदय रोगियों को आराम दिलाता है। यह पेट सम्बन्धी बीमारी, उष्णता व कोलेस्ट्राल को कम करता है। इसमें विटामिन्स ए, बी व मिननरल, बीटाकैरोटीन पाये जाते है जो इन्जाइम्स के निर्माण में सहायक होते है। यह प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है।

6. करेलाः

डायविटीज के मरीजों के लिए यह रामबाण है। इसमें कैलोरी काफी कम होती है। करेले में विटामिन बी–1, बी–2, बी–3, सी, मैग्नीशियम, जिंक फोलिक एसिड और आयरन पाया जाता है। करेला+टमाटर+खीरा का जूस हृदय व डायविटिज रोगियों को अति लाभप्रद होता है।

7. चुकन्दरः

इसमें पोटैशियम और मैगनीज पाया जाता है। इसमें कैलोरी कम होती है। यह त्वचा सम्बन्धी बीमारियों के इलाज में काफी कारगर है। इसको बथुआ व गाजर के साथ उबालकर पीने से हिमोग्लोबीन में आशातीत बृद्धि ऑकी गयी है। शलजम में मौजूद ग्लूकोसिनोलेटस कोलेन कैंसर के कोशिकाओं की वृद्धि को रोकता है।

8. मूलीः

यह स्वाद में उम्दा और कम कैलोरी वाली होने के साथ इसमें विटामिन सी, आयरन, पोटैशियम, बीटा कैरोटीन व फाइवर होता है। यह हृदय रोगियों के लिए भी हितकर होता है। इसके प्रयोग से पेट के कीटाणु (हानिकारक) समाप्त हो जाते है। लीवर रोगियों के लिए रामबाण है।

9. नीबूः

इसमें विटामिन सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा इसमें विटामिन बी, कैलशियम मैगनिशियम और कार्बोहाइड्रेट पाया जाता है। गर्मी में यह शरीर को ठण्डक देता है। यह पेट की गड़बड़ी, लीवर व डायविटीज में भी लाभकारी है। नीबू में पोटैशियम की उपस्थित के कारण हृदय रोगियों के लिए काफी फायदे मन्द है। यह प्रतिरक्षा तन्त्र को मजबूत करता है। मोटापा कम करने हेतु भी नीबू लाभ दायक बताया गया है।

10. धनियाः

धनिया की हरी पत्ती एवम् मुलायम तने को चटनी बनाये, साक–भाजी, सूप सलाद को स्वादिष्ट व पोषकतायुक्त बनाने में प्रयोग किया जाता है। औषधीय रुप से इसका प्रयोग अपच, दस्त, पेचिस, जुकाम व मूत्र विकार से सम्बन्धित रोगों में होता है। इसके वाष्शील तेल, सील बंद खाद्य पदार्थ सूप, चाकलेट, कैंडी व खुशबूदार साबुन बनाने में काम आता है।

अन्त में ऊपरलिखित साक–सब्जी के प्रयोग के साथ कुछ निम्न खास वातों पर भी ध्यान दें–

(1) सन्तुलित आहार लें।
(2) अपनी सोच सकारात्मक रखें।
(3) बुढापा रोकने में विटामिन सी की बहुत भूमिका होती है इसलिए विटामिन सी वाली साग सब्जी व फल खायें।
(4) दिन में कम से कम 10 गिलास पानी पीयें।
(5) भोजन में ताजे फल व सब्जियॉ लें।
(6) शारीरिक श्रम से जी न चुरायें।
(7) पेड पौधे लगायें इनकी देखभाल करें।

अतः पर्यावरण स्वच्छ तो जीव जगत सुरक्षित

गोशालाएं आर्थिक रूप से स्वालम्बी बनें

- डॉ.डी.एस.भण्डारी

राजस्थान प्रारम्भ से धार्मिक रहा है एवं जन भावनाएं धार्मिक कार्यों से ओतप्रोत रही है। फलस्वरूप राजस्थान गोवंश के प्रति श्रद्धालु एवं क्रियाशील रहा है। भारत में सबसे अधिक गोशालाएं राजस्थान में है। वर्तमान में यहा 628 गोशालाएं पंजीवृत्त है, जिसमें 2,43,840 गौवंश

मौजूद हैं। लगभग 55-60गोशालाएं ऐसी हैं जो राज्य सरकार द्वारा पंजीकृत नहीं है। उनमें भी 30-35 हजार गौवंश पाले जा रहे है। इस तरह राजस्थान में ३ लाख गौवंश का पालन पोषण किया जा रहा है।

वर्ष 1997 में राजस्थान पशुगणना के अनुसार राज्य में 1,21,41,000 गौवंश था। वर्ष 2003 की पशुगणना के अनुसार वर्तमान में 1,08,53,000 गौवंश मौजूद है। इन आंकडो को देखने से यह ज्ञान होता है कि पांच वर्षे में करीब 13 लाख गौवंश की कमी हुई है। इसका मुख्य कारण है राज्य के बहुत बडे हिस्से में निरतंर अकाल।

राजस्थान की सबसे ज्यादा गौशालाओं की संख्या मरू क्षेत्र में है। जिसमें मुख्यत: झुंझनूं,सीकर, जोधपूर, बीकानेर, बाडमेर, जैसलमेर, नागौर और पाली जिला मुख्य है। राज्य के उन हिस्सो में जहां निरतंर वर्षा होती है और प्रचुर मात्रा में खेती की रही है। वहां पर गोशालाओं की संख्या कम है। किंतु 8-10 वर्षो से यह देखने में आ रहा है कि उन क्षेत्रो से यह देखने में आ रहा है कि उन क्षेत्रों में भी छोटी-छोटी गोशालाएं स्थापित की जा रही है। जिसका मुख्य कारण कृषि कार्यो में ट्रेक्टर के अधिक प्रयोग होने से गौवंश को पालने का काम लगभग कम कर देना है। गत वर्षे में इस क्षेत्र में पानी की कमी होने के कारण किसानों ने अपने अनुपयोगी गौवंश को घरों से निकाल दिया है। इस कारण से भी इन क्षेत्रों में गत तीन वर्षो में 200-225 नई गोशालाएं स्थापित हुई है। समाज के भावनाशील व्यक्तीयों एवं व्यापारियों की धर्म-निष्ठा तथा गौमाता के प्रति विशेष प्रेम होने के कारण जगह-जगह पर गौशालाएं स्थापित की गई। कई गौशालाएं अकाल के नाम पर स्थापित कर दी गई जिन्हें अब प्रतिदिन की आवश्यकता के अनुसार चलाना मुश्किल हो रहा है। राज्य सरकार एवं भारत सरकार द्वारा अकाल के समय इन गोशालाओं को लाखों रूपये का अनुदान दिया जाता है। गत वर्षो में भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड के द्वारा दो करोड रूपये से अधिक की राशि राजस्थान को पंजीकृत गोशालाओं को आवंटित की गई ।इसी तरह से जब-जब भी अकाल पडता है,राजस्थान सरकार की तरफ से भी आार्थिक सहयोग दिया जाता है। यही सिलसिला गत कई वर्षो में चला आ रहा है। इस लेख के द्वारा यह विचारणीय बिंदु पाठकों के सामने रखा जा रहा है कि इतनी बडी संख्या में गोशालाओं का उपयोग हम किस तरह से करें कि बिना किसी चंदा सहायता से वे खउी हो सकें,आत्मनिर्भर बन सकें। गत 50 वर्षो में गोशालाओं में कोई भी आर्थिक सुधार व्यापक रूप से देखने में नहीं मिल रहे है। पूरे राजस्थान में 10 प्रतिशत गोशालाएं पुरानी विचारधारा से कार्यरत है। अत: हमें यह सोचकर निर्णय करना होगा कि क्या हमारी गोशालाओं को पुराने ढरें पर ही चलने दें या इसमें आवश्यकता के अनुसार आमूलचूल परिवर्तनकरें,जो राष्ट्र के हित में हो। मेरे अनुभव के अनुसार कुछ विशेष विचार धाराएं ऐसी है जो इन गोशालाओं में सुधार नही होने दे रही है।

पहली विचारधारा तो यह कि सभी गोशालाएं धार्मिक भावनाओं से खोली गई है और उनमें जितने भी कार्यरत व्यवस्थापक हैं वे यह समझते है कि सेठों से निरतंर सहयोग राशि आती रहे एवं गोशाला के व्यवस्थापक बिना विशेष परिश्रम के गोशाला चलाते है। इस प्रकार की विचारधारा होने से गोशाला के व्यवस्थापक प्राय: अपने स्तर पर कार्यशील योजनाओं को लागू नहीं करना चाहतें। उन्हें यह डर रहता है कि अगर गोशाला में कोई आदमी का स्त्रोत चालू हो जाएगा तो दानदाता लोग दान देना कम कर देंगे।

दूसरा कारण गोशाला में जो भी गोवंश है,उसे उत्पादन की ओर नहीं मोडा गया है। अगर गोसंवर्धन का मूलमंत्र साथ में रखकर सार्थक प्रयास किया होता तो आज ये गोशालाएं किसानों के लिए उत्तम नस्ल की गायों के साथ उत्तम नस्ल के बैल भी छोटी जोत के किसानों को उपलब्ध करा सकती है। इस परिप्रेक्ष्य में यह विचार करना आवश्यक है कि इन गोशालाओं का आर्थिक सुधार किस तरह से किया जाए ताकि आने वाले अकालों में भी अपने पैरों पर खडे होकर उसका मुकाबला कर सकें और संवर्धन का कार्य भी नहीं रूके।

आर्थिक सुधारों का प्रथम चरण अच्छे गोसंवर्धन से ही किया जा सकता है। इसके लिए सबसे बडी आवश्यकता यह है कि हम वहां की भौगोलिक स्थिति को देखते हुए अच्छे नस्ल के प्रजनन हेतु नर सांड उपलब्ध कराए। अच्छे नस्ल के सांडो के प्रजनन से 8 से 10 साल में पूरी गोशालाओं की काया पलट की जा सकती है। राजस्थान गौसेवा संघ की स्थापित गौशाला में अच्छे नस्ल के साण्ड का उपयोग करने से आमूलचूल परिवर्तन देखने में आया है। कम दूध देने वाली गायों से भी अगर अच्छे नस्ल के नर से प्रजनन कराया जाता है,तो उनकी होने वाली संतानों से 5 से 6 किलो दूध प्रतिदिन प्राप्त किया जा सकता है।

यह प्रक्रिया लंबी अवश्य है किंतु धैर्यपूर्वक करने से इसके अच्छे परिणाम प्राप्त होते है। गौसंवर्धन तभी होगा जब गोशालाओं के सब अनावश्यक नर बछडों का बधियाकरण किया जाए एवं एक भी नर बछडा वहां पर ऐसा नहीं हो जो प्रजनन की क्रिया में रूकावट डाले। राजस्थान की सभी गौशालाओं को इतना जनोपयोगी बनाया जाए कि राष्ट्र को उसका वास्तविक लाभ प्राप्त हो सके। वर्तमान में भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष करीब 13 हजार करोड रूपये की राशि रासायनिक

खाद के लिए किसानो की अनुदान के रूप में दी जाती है। अगर गौशाला की गायों के गोबर को उत्तम खाद में परिवर्तन किया जाए तो किसानों को जमीन सुधारने के साथ-साथ सस्ती उत्तम खाद भी प्राप्त हो सकती है। जो किसी भी हालत में रासायनिक खाद से कम नही होती है। राजस्थान की विभिन्न गोशालाओं में जैसे की बताया गया है लगभग तीन लाख गोवंश है । ओसतन 1 पशु से 8 किलो गोबर प्राप्त होता है तो लगभग 25,00,000 किलो गोबर प्रतिदिन प्राप्त किया जा सकता है। अगर इसकी किमत 25 पैसे प्रति किलो भी लगाई जाऐ तो करीब 6,00,000 रूपये प्रतिदिन तो केवल गोबर से प्राप्त किए जा सकते है। यदि इसी गोबर को वैज्ञानिक ढंग से या अन्य आवश्यक तत्वों को मिलाकर इसका उत्तम खाद बनाया जाए तो प्रतिदिन 10 लाख रूपये की आय हो सकती है। इस प्रकार एक वर्ष में साढे छत्तीस करोड रूपये प्रति वर्ष का उत्पादन इन गोशालाओं से लिया जा सकेगा और प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार एक वर्ष में साढे छत्तीस करोड रूपये प्रति वर्ष का उत्पादन इन गोशालाओं से लिया सकेगा और प्रतिदिन 12,00,000 किलो या 12,000 टन उत्तम खाद प्राप्त किया जा सकता है। इस तरह से समूचे राजस्थान मे एक नई क्रांती इन गोशालाओ के द्वारा लायी जा सकती है। उत्तम वैज्ञानिक ढंग से खाद बनाने में 2000 व्यक्तीयों को साल भर रोजगार प्राप्त होगा एवं गोशालाओं की वर्तमान आय आसानी से चार गुणा केवल गोबर से बढाई जा सकती है।

उपर्युक्त आंकडो को तथ्यात्मक रूप से परिवर्तित करने हेतु पिछले कई वर्ष से वैज्ञानिको ने जैविक खाद के उत्पादन का कार्य किया है। आज पूरे देश में जैविक खाद की खेती का प्रचलन जोर-शोर से किया जा रहा है। नागरिकों को समाचारपत्रों एवं अन्य माध्यमों से रासायनिक खाद के दुष्प्रभावों से अवगत कराया जा रहा है। परिणास्वरूप जैविक खाद की मांग निरतंर उठाते हुए जैविक खाद बनाने का कार्य अपना सकती है।

जैविक खाद क्या है? इस सबंध में यहां लंबी चर्चा नहीं करके सिर्फ इतना बताना ही उचित होगा कि यह खाद मृदा की सभी आवश्यकताओं को पूरा कर भरपूर फसल दे सकती है। इसके लिए गोबर खाद अति उत्तम जरिया है,जिसको हम वैज्ञानिक ढंग से उच्च कोटि की बना सकते है। वैज्ञानिकों ने वर्तमान में केंचुआ खाद एवं गोबर के साथ रॉक फॉस्फेट के मिश्रण आदि का उपयोग बताया है। महाराष्ट्र में कई वर्षो पूर्व गांधी विचारधारा से जुडे श्री नारायण देवराव पंडारी पांडे (नै.ड.प.) ने एक विधी प्रचलित की थी जिसमें उत्तम खाद बनाया जा सकता है। इस प्रकार केंचुआ का भी प्रयोग कर गोबर को उत्तम खाद में परिवर्तित किया जा सकता है। इसी तरह से अगर 3 प्रतिशत रॉक-फॉस्फेट गोबर में मिलाकर1 महिने तक गड्डे में रखा जाए तो किसानों को अपने खेतों में डी.ए.पी.डालने की कोई आवश्यकता नही होगी। इस विधि से वे रासायनिक खाद का उपयोग करना बंद कर सकते है। अत: हमें प्रत्येक गौशाला में जैविक खाद की इकाइयां स्थापित करनी चाहिए जिसमें केंचुआ खाद,फॉस्फेट के द्वारा या अन्य विधियों के द्वारा उत्तम खाद बनाकर किसानो को उपलब्ध करा सकते है। राजस्थान गोसेवा में पिछले करीब 8 सालों में केंचुआ खाद बनाने का कार्य प्रारंभ किया हुआ है, इसके सहयोग से आसपास के क्षेत्रों में कई इकाइयां कार्य कर रही है। राजस्थान में करीब110-12 गोशालाएं भी इस कार्य में सलंग्न है एवं 2 रूपये प्रति किलो के हिसाब से केंचुआ खाद बेची जा रही है। गोशालाएं यदि इस कार्य को अपने स्तर पर लेले तो इसकी लागत 60 से 65 पैसे प्रति किलो से अधिक नही आयेगी। इस तरह से गोशालाएं अपने आर्थिक विकास में अग्रसर हो सकती है।

वैदिक समय से ही गोमूत्र का महत्व हमारे ऋषि-मुनियों ने स्थापित किया है। फल स्वरूप शरीर के विभिन्न रोगों को दूर करने मे इसका उपयोग किया जाता रहा है। किंतु पिछले 40-50 वर्षो में इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। अब भारत के वैज्ञानिकों ने गोमूत्र को अमेरिका में पेटेंट कर इसके महत्व को सिद्ध कर दिया है। कृषि वैज्ञानिकों एवं कई संस्थाओं के कार्यकर्ताओ ने गोमूत्र के द्वारा कीट नियंत्रक औषधि बनाकर एक नयी प्रविधि का सूत्रपात्र किया है। सब्जियां,रूई की फसल एवं दलहनों में इस औषधि का व्यापक उपयोग किया गया है। सिर्फ गाय के गौमूत्र के छिडगाव करने से ही फसल को कींटो से बचाया जा सकता है, कई प्रान्तों में जैविक कीट नियंत्रक के नाम से विभिन्न प्रकार की औषधियां बनाकर बाजार में बेचना प्रारंभ कर दिया है ।जिसकी कीमत 140-160 रूपये प्रति लिटर तक है। उनमें मुख्य अंश देशी गायों के गोमूत्र का है। गोमूत्र के द्वारा कीट रोधक/कीट नियंत्रक जो भी औषधियां बनाई जा रही है उसके सुखद परिणाम प्राप्त हुए है। इस कार्य के लिए कई कंपनियां 3 रूपये प्रति लिटर अच्छे गोमूत्र को खरीदने के लिए उत्सुक है। आने वाले कुछ वर्षो में यह सुनिश्चित है कि गोमूत्र के द्वारा बनाए गए कीट

नियंत्रक एवं औषधि व्यापक रूप से इस्तेमाल होंगी। अत: गोशालाओं को आगे बढकर ऐसी संस्थाओं से जुडना अति आवश्यक है जो उनकी गोशालाओं से अच्छी मात्रा में गोमूत्र खरीद सके।

अनेक गोशालाओं की बडी-बडी भूमि बिना खेती के

अनुपयोगी पडी हुई है। जिसका उपयोग औषधियों के पेड लगाने के काम के में किया जा सकता है। पिछले कुछ वर्षो से राजस्थान का ही पौधा 'रतन जोत' पूरे विश्व में एक क्रांतीकारी पौधे के रूप में प्रतिष्ठा पा रहा है। इस पौधे के बीज से प्राप्त तेल का उपयोग आने वाले वर्षो में बडी मात्रा में डीजल के रूप में किया जाएगा। अत: गोशाला की जमीन में आवश्यक पौधे लगाकर आर्थिक स्थिति को सुधारने में बडा सहयोग किया जा सकता है। भारत सरकार के द्वारा रासायनिक खाद पर करीब 13 हजार करोड रूपये अनुदान प्रतिवर्ष किसानों को उपलब्ध कराया जाता है। अगर भारत सरकार 100 करोड रूपये भी जैविक खाद के प्रचार - प्रसार एवं किसानों हेतु योजनाएं ले तो निश्चय ही जैविक खाद का उत्पादन बढ जाएगा। एवं जनता को शुद्ध आहार प्राप्त हो सकेगा। यदि गोशालाएं नई चेतना और विश्वास के साथ उक्त कार्य करेंगी तो वे आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास में भी सहभागी बन सकेंगी।

नवम्बर माह में पशुधन सम्बन्धित कार्य

- पशुओं को खुर–मुहँ बिमारी के बचाव का टीका लगवायें।
- थैनेला रोग से बचाव के उपाय करें।
- सर्दी के मौसम में भैंस अधिकतर ताव में आती है अत: भैंस को समय से मुराई नस्ल के झोटे से गाभिन करवायें।
- पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए पशु घर का उचित प्रबन्ध करें।
- पशुओं का बिछावन सूखा होना चाहिए तथा प्रतिदिन बदल देना चाहिए।
- पशुओं को खनिज मिश्रण अवश्य खिलाएं।
- जई फसल की बिजाई इस माह पूरी कर लें।
- बरसीम फसल की सिंचाई 15–20 दिन के अन्तराल पर करते रहें।
- लूर्सन की बिजाई माह के मध्य तक अवश्य पूरी कर लें।

MANUFACTURER AND BULK SUPPLIER OF FERTILIZERS PRODUCTS

UDIT OVERSEAS PVT. LTD.

137, INDUSTRIAL AREA DEHRA, TEHSIL-CHOMU, DISTT. JAIPUR

Products Range:-

- Micronutrients
- Mixture
- Secondary Nutrients
- Growth Promoters
- Bio Stimulants
- Bio Fungicide
- Bio Insecticide
- Bactericide
- Wetting Agent
- Zyme
- Tonic

WE WELCOME YOUR INQUIRY

CONTACT DETAIL

MR. ALOK BENIWAL

MOB: 9660258447

अश्वगंधा – एक शक्तिवर्धक औषधीय फसल

आई. एस. यादव, ओ. पी. यादव एवं जे. एस. हुड्डा
औषधीय, सगंध एवम् अल्प प्रयुक्त पौध संभाग
अनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग
चौधरी चरण सिंह हरियाणा .षि विश्वविद्यालय, हिसार – 125 004

अश्वगंधा सोलेनेसी कुल का पौधा है तथा यह लगभग समस्त भारत में पाया जाता है। अधिकत्तर यह राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, गुजरात, पश्चिम उत्तरप्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब, महाराष्ट्रा, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, केरल एवं हिमालय के पर्वतों पर 1600 मीटर ऊँचाई तक पाया जाता है। भारत के अतिरिक्त यह औषधीय पौधा जार्डन, पूर्वी अफ्रीका, मिस्र, पाकिस्तान के बलुचिस्तान प्रांत, श्रीलंका, स्पेन, मोरक्को में भी पाया जाता है। आजकल भारतवर्ष के कई भागों में इसकी खेती की जाने लगी है।

अश्वगंधा का पौधा झाड़ीदार तथा बहुशाखीय होता है जो 2–4 फुट तक बढ़ जाता है। यदि इसके ताजे पत्ते तथा जड़ को मसल कर सूंघे तो उनसे घोड़े के मूत्र जैसी गंध आती है। इसी कारण से इसका नाम अश्वगंधा रखा गया है। पत्ते हल्के हरे रंग के सफेद रोयेदार तथा अंडाकार होते हैं। फूल पीला एवं हरापन लिये चिलम के आकार का होता है। फूल पत्रकोण से निकल कर शाखाओं के अग्रभाग पर दिसम्बर से मार्च तक आते हैं। फल गोलाकार तथा रसभरी के समान होते हैं। फल के अन्दर असंख्य बीज होते हैं। इसकी जड़ मूली की तरह, लेकिन पतली होती है जिसकी मोटाई 2.5 से 4.0 सें. मी. तथा लम्बाई 30 से 50 सें. मी. तक होती है। यह जंगलों में भी बहुत मिलता है, परन्तु उगाई गई अश्वगंधा की जड़ें अच्छी होती हैं।

विभिन्न भाषाओं में अश्वगंधा का नाम

हिन्दी :	असगंध, अश्वगंधा, असकन, आसकन, आसकंद
संस्.त :	अश्वगंधा, बलदा
पंजाबी:	असगंध, अश्वगंधा
मराठी :	आसंध, डोरगुंज, असकन्धातिल्ली
गुजराती	आसंध, आसन, आसोर, घोड़ा आहन, घोड़ा आकुन
तमिल :	आमकुलांग, आमुक्कीरन, किझन्गु
कन्नड़ :	अश्वगंधा, हीरेमद्दी नेगिडा, किरेमल्लीनेगिडा
तेलगु :	पनेरू, पिल्लिवेन्द्रामु, अस्वगंधी
मलयालम	अमुक्कीरम, पेवेत्ती
अंग्रेजी:	विन्टर चैरी
लैटिन नाम	:विथानिया सोमनीफेरा ँपजींदपं `वउदपमितं क्नदंस)
वानस्पतिक कुल	:सोलेनेसी ँवसंदंबमंम)

औषधीय गुण तथा उपयोगः अश्वगंधा एक औषधीय फसल है। जिसका उपयोग आयुर्वेदिक तथा यूनानी औषधियों में बहुत किया जाता है। इसके बीज, फल, छाल एवं पत्तियों को विभिन्न शारीरिक बीमारियों के उपचार में प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में इसकी जड़ चर्म रोग, गठिया रोग, जोड़ों व फेफड़ों की सोजन, पक्षाघात, अलसर, रक्तचाप, पेट के फोड़ों, दुर्बलता तथा थकावट को दूर करने में प्रयोग होती है। अश्वगंधा को शक्तिवर्धक भी माना जाता है।

अश्वगंधा की जड़ का उपयोग टानिक के रूप में स्त्री, पुरूष, बच्चे व वृद्ध सभी के लिये उपयोगी है। जड़ का प्रयोग अनिद्रा, रक्तचाप, मूर्छा, चक्कर, सिरदर्द, तंत्रिका विकास, हृदयरोग, शोध, शूल, रक्त कोलेस्ट्राल कम करने में बहुत लाभकारी है। जड़ के चूर्ण का सेवन 3–4 सप्ताह से 3–4 माह तक करने से शरीर में ओज, स्फूर्ति, बल, शक्ति तथा चेतना आती है। सभी प्रकार के वीर्य रोग दूर करके बलवीर्य बढ़ाता है। शुक्राणुओं की वृद्धि करके कामोत्तेजक को बढ़ाता है तथा पाचन शक्ति सुधारता है। मांस बढ़ाता है, शारीरिक दूर्बलता दूर कर शरीर सुगठित बनाता है और बच्चों के सूखा रोग में लाभकारी है। नारी को गर्भधारण योग्य बनाता, प्रसव के बाद दूध बढ़ाने वाला, बल बढ़ाने वाला, कमजोरी तथा कमर और कुल्हे का दर्द दूर करता है। इसकी हरी पत्तियों का लेप त्वचा रोग, जोड़ों की सूजन, घावों को भरने तथा अस्थिक्षय के उपचार हेतू किया जाता है। इसके प्रयोग से रूका हुई पेशाब भी ठीक से आता है और मरीज़ को आराम मिलता है।

रासायनिक संरचनाः अश्वगंधा की जड़ों में 13 प्रकार के एल्कोलाइड पाये जाते हैं। मुख्यतः विथेनिन और सोमनीफोरीन का उपयोग आयुर्वेदिक तथा यूनानी दवाईयों के निर्माण में किया जाता है। जड़ों में स्टार्च, शर्करा, ग्लाइकोलाइडस एवं विदनोल पाये जाते हैं।

जलवायुः इसकी अच्छी बढत के लिए शुष्क मौसम ज्यादा उपयुक्त हैं। यह एक पछेती खरीफ फसल है। इसकी खेती शुष्क से समशीतोष्ण जलवायु जहाँ औसत तापमान 20–35 डिग्री सें. ग्रेड तक हो, वर्षा 500 से 750 मिलीमीटर हो तथा ठंड का तापमान 5 डिग्री सेल्सीयस से कम न हो, में की जा सकती है।

भूमिः इसकी खेती के लिये बलुई दोमट से हल्की रेतीली भूमि जिसका पी.एच. 7 से 8 हो तथा जल निकास की पर्याप्त व्यवस्था हो, उपयुक्त रहती है। निम्न तरह की भूमि में भी अश्वगंधा की खेती से संतोषजनक उपज ली जा सकती है।

खेत की तैयारीः डिस्क हैरो या देशी हल से दो या तीन बार अच्छी तरह जुताई करके, सुहागा लगाकर खेत को समतल तथा भुरभुरा बना लें।

किस्मः जवाहर अश्वगंधा–20, जवाहर अश्वगंधा–134 और पौशिता इसकी विकसित किस्में हैं।

बोने का समयः अश्वगंधा की बुवाई के समय खेत में अच्छी नमी होनी चाहिये। जब एक दो बार वर्षा हो जाती हो तथा खेत की जमीन अच्छी तरह से संतृप्त हो जाये तभी बुवाई करनी चाहिये। इसलिये अगस्त और सितम्बर के महीने अश्वगंधा की बुवाई के लिये उत्तम है। सिंचित अवस्था में इसकी बिजाई सितम्बर/अक्तूबर के महीने में भी कर सकते हैं।

बीज की मात्राः अगर बिजाई छिटककर की जाती है तो लगभग 4 किलो बीज की आवश्यकता होती है। लाईनों में बिजाई करने से बीज की मात्रा कम लगती है। नर्सरी में बुवाई करने के लिये 2 किलो बीज प्रति एकड़ काफी होता है।

बिजाई की विधिः अश्वगंधा की बिजाई अधिकत्तर छिड़काव द्वारा की जाती है। बीजों को बोने से पहले नीम के पत्तों के काढ़े से उपचारित करें। जिससे फफूँदी आदि से हानि न होने पाये। अश्वगंधा की अच्छी फसल के लिये कतार से कतार का फासला 20 से 25 सें. मी. तथा पौधे से पौधे का 4–6 सें. मी. होना चाहिये। बीज 2–3 सें. मी. से अधिक गहरा नहीं डालना चाहिये। इससे एक एकड़ में लगभग 3–4 लाख पौधे लग सकते हैं।

खादः अच्छी फसल लेने के लिये खेत की तैयारी के समय 8–10 टन गोबर की या अन्य जैविक खाद मिला देनी चाहिये।

सिंचाईः अश्वगंधा की फसल को पानी की अधिक आवश्यकता नहीं होती व वर्षा पर ही निर्भर रहती है। यदि वर्षा समय पर न हो तो अच्छी फसल लेने के लिये 2–3 सिंचाई करें। पहली सिंचाई उगने के 30–35 दिन बाद तथा दूसरी व तीसरी सिंचाई 60–70 दिन के अन्तराल पर करें।

निराई–गुड़ाईः अच्छी उपज के लिए समय–समय पर खरपतवार नियन्त्रण करें ताकि जड़ों की अच्छी बढ़वार हो सके। इसके लिए बिजाई के 25–30 दिन बाद खुरपे से तथा 45–50 दिन बाद कसोले से गुड़ाई करें। अगर दो या अधिक पौधे एक साथ हो तो पहली गुड़ाई के साथ–साथ छंटाई भी कर देनी चाहिये।

बीमारी व कीड़ेः इस फसल पर कीड़ों का कोई विशेष आक्रमण नहीं होता लेकिन कभी–कभी माहूकीट व पूर्ण झूलसा रोग लग जाता है। इसके नियंत्रण के लिये कोई भी उपलब्ध जैविक कीटनाशक का प्रयोग करें। आवश्यकता पड़ने पर 15–20 दिन बाद दोबारा छिड़काव करें।

कटाई व खुदाईः अश्वगंधा की फसल बीजाई के 180–190 दिन बाद फरवरी–मार्च में तैयार हो जाती हैं। जब पौधों की पत्तियाँ पीली पड़ जाए और फल लाल हो जाए तब फसल परिपक्व मानी जाती है। खेत में हल्का पानी लगा देना चाहिये जिससे जड़ें आसानी से जमीन से निकल आए। पूरे पौधे को जड़ सहित मूली की तरह उखाड़ लिया जाता है। इसके पश्चात् जड़ों के गुच्छों से 1–2 सें. मी. ऊपर से तना अलग कर दिया जाता है तथा जड़ों को 8–10 सें. मी. के टुकड़ों में काटकर सुखाने के लिये छाव में रख दिया जाता है। कटी हुई जड़ों को तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाता है तथा जड़ों की ग्रेडिंग कर ली जाती है। जड़ का वजन तथा एल्कोलाइड की अधिक मात्रा 180 दिनों बाद खुदाई करने पर पाई गई है। फलों को तोड़कर उसकी गहाई करके बीज निकाल लिया जाता है। बीज को अच्छी तरह से सूखा लिया जाता है ताकि इसमें 8 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं रहें व जड़ों में भी 3–4 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होनी चाहिये।

उपज तथा बाजार मूल्यः प्रायः अश्वगंधा की खेती से प्रति एकड़ 2.5 से 3 क्विंटल सूखी जड़ें तथा 50–60 किलोग्राम बीज प्राप्त हो जाता है। बीज से अतिरिक्त आमदनी हो जाती है। सूखी जड़ें 60–70 रूपये प्रति किलो तथा बीज 50–60 रूपये प्रति किलो बिक जाता है।

आय–व्ययः जड़ व बीज से लगभग 20,000–25,000 रु. प्रति एकड़ कुल आमदनी हो जाती है तथा खर्चा लगभग 4000–5000 रुपये आ जाता है। इस प्रकार एक एकड़ से 6 महीने में लगभग 16,000–20,000 रूपये का शुद्ध लाभ हो जाता है।

युवक–युवतियों के लिए गृह विज्ञान शिक्षा से बहुआयामी सम्भावनाएँ

डॉ. सुमन प्रसाद मौर्य, प्राध्यापक, गृह विज्ञान महाविद्यालय
एवं डॉ. रवि प्रकाष मौर्य, कार्यक्रम समन्वयक/प्राध्यापक
कृशि विज्ञान केन्द्र, अम्बेडकर नगर, उ.प्र. 224168
न.दे. कृशि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय कुमारगंज, फैजाबाद– 224 229 उ. प्र.

प्रस्तावना

शिक्षा हमारे देश के विकास का आधार रहा है। जहॉ हमारे प्रचीन भारत में शिक्षा के सुराग मिले है वहॉ भारतीय शिक्षा पद्यति ने हमारे देश के भावी करणधारों को षिक्षा का मजबूत आधार दे कर देष के युवाओं को विदेषों में भी उच्च कार्य कर देष की बुद्विि का लोहा मनवाया है। गृह विज्ञान शिक्षा हमारे देष में अनौपचारिक एवं औपचारिक दोनों ही स्वरूप में दीर्घकाल से प्रचलित है। औपचारिक शिक्षा डिग्री के रूप में देष के सभी प्रदेशों में दिया जा रहा है। इस की शिक्षा स्नातक एवं परास्नातक स्तर की होती है। इसके ज्ञान के महत्व को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान ने राष्ट्रीय स्तर पर स्कूली पुस्तको में इस ज्ञान को संक्षिप्त में सम्मिलित किया है। उच्च षिक्षा की आकाक्षां हर माता–पिता को अपने बच्चों के लिए होती है। इसके लिए उच्च वर्ग किन्तु गरीब परिवार भी अपना प्रदेष पलायन कर षहरों में बस जाते है। उद्वेष्य केवल एक कि बच्चों को अच्छी षिक्षा प्राप्त हो जिससे वह जीवन का अच्छी तरह से यापन कर अपने परिवार की उचित देखरेख एवं आर्थिक स्तर उच्चकर सकते है। भारत में गृह विज्ञान षिक्षा की षुरूआत लोगों के जीवन के रहन–सहन के स्तर में सुधार लाने के लिए किया गया था। आजकल गृह विज्ञान षिक्षा एक तकनीकि षिक्षा का स्वरूप ले चुकी है जिससे युवक–युवतियॉ सरकारी, गैर–सरकारी क्षेत्र में नौकरी पा सकते है और स्वतः रोजगार षुरू कर सकते है।

भारत में गृह विज्ञान उच्च षिक्षा की दो प्रणालियॉ है। एक पारम्परिक और दूसरी कृशि विष्वविद्यालय द्वारा संचालित होती है। पारम्परिक विष्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर बी.ए. एवं परास्नातक स्तर पर एम.ए. की उपाधि प्रदान की जाती है जबकि कृशि विष्वविद्यालय में बी.एस. सी. (गृह विज्ञान) एवं एम.एस. सी (गृह विज्ञान) की उपाधि से आलंकृत किया जाता है। यानि कृशि विष्वविद्यालयों में गृह विज्ञान की षिक्षा एक वैज्ञानिक शिक्षा है जहॉ विज्ञान के ज्ञान को व्यवहारिक रूप में लोगों के जीवन के स्तर को सुधरने और मानव एवं अन्य संसाधनो के उचित उपयोग से समाज और देश को लाभान्वित करता है। बिजली से जुड़ने के कारण षहरी एवं ग्रामवासी दोनो ही नई तकनीको का उपभोग कर सकते है। पारम्परिक विष्वविद्यालय में स्नातक स्तर पर अभी तक केवल स्त्री प्रधान है यानि इस षिक्षा को केवल युवतियॉ ग्रहण करती है। जबकि कुछ कृशि विष्वविद्यालयों में गृह विज्ञान की षिक्षा युवकों के लिए भी खुली है जैसे गोविन्द बल्लभ पंत कृशि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर, उत्तराखण्ड। नरेन्द्र देव कृशि एवं प्रोद्योगिक विष्वविद्यालय ने भी कुछ वर्शो के लिए युवकों को गृह विज्ञान की षिक्षा का अवसर दिया था। वहॉ से शिक्षित युवक अभी परास्नातक की उपाधि के लिए बनारस हिन्दू विष्वविद्यालय एवं अन्य कृशि विष्वविद्यालय में दाखिला ले चूके है। दोनों तरह की षिक्षा प्रणाली में विशय का भी अन्तर है। बी.ए. यानि पारम्परिक विष्वविद्यालय की षिक्षा में युवतियॉ गृह विज्ञान के एक विशय के रूप में पढ़ाया जाता है। इसमें विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार विशय चुन कर आवेदन करता है और स्थान रिक्त होने पर ही महाविद्यालयों पर दाखिला लिया जाता है।

उ. प्र. में बी.ए. में तीन विशय लेने होते है जिस में से एक विशय गृह विज्ञान हो सकता है और तीन वर्श में पूर्ण किया जा सकता है। जबकि कृशि विष्वविद्यालय में गृह विज्ञान एक महविद्यालय है जिसमें गृह विज्ञान के पाचॅ विभाग है और चार वर्श की षिक्षा में उन्हे पहले दो वर्श गृह विज्ञान के सारे विशयों जैसे खाद्य एवं पोशण, मानव विकास, वस्त्र एवं परिधान डिजाइनिग, परिवार संसाधन प्रबन्धन और गृह विज्ञान प्रसार एवं प्रचार प्रबन्धन के अध्ययन करने होते है। साथ ही कुछ महत्वपूर्ण कृशि के विशय, भाशा एवं मूल विज्ञान एवं कला के विशयो का अध्ययन करना होता है। बाद के दो वर्शो में वे गृह विज्ञान के किसी एक विशय में अपने रूचि एवं रूछान के अनुरूप परिपूर्णता ग्रहण करते है और तकनीकी ज्ञान एवं कार्यकुषलता प्राप्त करते है। इन अन्तिम दो वर्शो में करीब पॉच माह की इनप्लाट या इनटर्न प्रषिक्षण लेना अनिवार्य होता है। इन चार वर्शो के बाद बी.एस. गृह विज्ञान के विद्यार्थी अपनी आवष्यकता अनुसार उच्च षिक्षा या स्वः रोजगार आदि विकल्पों में से चुन सकते है। जो अभियार्थी उच्च षिक्षा लेने के इक्छुक होते है वे अपने अन्तिम वर्श में जूनियर रिसर्च फेलोषिप के लिए आवेदन कर उसकी परीक्षा दे सकते है। यह परीक्षा भारत के राश्ट्रीय स्तर की परीक्षा होती है जिसको उत्तीर्ण कर वरीयता के आधार पर अपने इक्छानुसार देष के किसी भी कृशि विष्वविद्यालय में दाखिला मिल सकता है और आपके अच्छे अंक आते है तो उन्हे छात्रवृति भी मिल सकती है।

पारम्परिक विष्वविद्यालय और कृषि विष्वविद्यालय में गृह विज्ञान में एक विषेश अन्तर यह भी है कि पारम्परिक विष्वविद्यालय में गृह विज्ञान की षिक्षा सीमित स्वरूप में पढ़ाई जाती है जबकि कृशि विष्वविद्यालय में गृह विज्ञान को विस्तार से पढ़ाया जाता है और कार्यकुषलताओं पर विशेष बल देते है। साथ ही कृशि विष्वविद्यालय में गृह विज्ञान को ग्रामीण – आधुनिक तकनीको एवं उपकरणो के बारे में बताया एवं उन्हे उपयोग करना सिखाया जाता है। इससे ग्रामीण युवतियों को ग्राम उपयोगी जानकारी प्राप्त कर अपनी जिम्मेदारियॉ कम समय एवं कम थकावट से निपटा पाए और चाहे षहरी हो या ग्रामीण, किसी भी परिवेष मे ढल सकता है। ऐसे वह अपने परिवार की तरकी के लिए प्रयास कर सकती हैं।

गृह विज्ञान के बहुआमी सम्भावनाएँ:

परियोजनाओं संचालन : विज्ञान दिन प्रतिदिन नई जानकारी एवं उनके उपयोगो के बारे में खोज कर रहा है। वह ज्ञान जो धर परिवार को सुखी–सम्विध बनाने के लिए उपयागी हो वह गृह विज्ञान है। सरकार का भी यह प्रयास रहता है कि देष के बच्चे, महिलाए युवक–युवतियॉ, पुरूश एवं वृध स्वस्थय और सुखी रहे। इसके लिए वह समय–समय पर उन्के हित में विभिन्न कार्यक्रम एवं परियोजनाओ संचालित करती हैं। इन कार्यक्रमो को जनता के हित में देखरेख करने के लिए प्रषिक्षण करना पड़ेगा। ऐसे में गृह वैज्ञानिकों का चयन परियोजना को सफलता की ओर ले जा सकता है और सरकार के इस कार्य में अच्छा सहयोग दे सकते है। हमारे देष में एकीकृत बाल विकास सेवाएॅ एक सम्पूर्ण योजना है जो हर प्रदेष एवं जनपद में कई ब्लाकों चल रहा है। इन सेवाओं को आंगवाड़ी के माध्यम से वितृत किया जाता है। हर पांच आंगनवाड़ी पर एक सूपरवाइसर होती है जो आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ती के कार्य का निरीक्षण करती है

जैविक खेती में पौध संरक्षण

संगीता मेहता
विद्या वाचस्पति ;पौध व्याधीद्ध
कृषि महाविद्यानय, बीकानेर
डॉ0 दयानन्द
सहायक प्राध्यापक (शस्य)
कृषि विज्ञान केन्द्र, आबूसर–झुन्झुनूं
डॉ0 एस.एम. मेहता
कार्यक्रम समन्वयक
कृषि विज्ञान केन्द्र, आबूसर–झुन्झुनूं

प्रकृति का नियम है ''जीवो जीवस्य भौजनम'' प्रकृति में फसलों को हानि पहुंचाने वाले कीट है तो साथ इन कीटों के दुश्मन कीट भी मौजूद हैं। पहले प्रकार के कीट पौधों का रस चूस कर वायरल संक्रमण करते हैं जैसे चेपा, हरा तेला, थ्रिप्स, लाल मकड़ी, पेन्टेड बग इत्यादि। इन कीटों के अनेक प्राकृतिक दुश्मन भी हैं जैसे लेडी बर्ड बीटल ;दालद्ध क्राइसोपा व मकड़ी इत्यादि। दूसरी तरह के कीटों में लट प्रमुख है जो फसलें कुतरती है। ट्राइकोग्रामा, मडवेस्प, रोबर मक्खी, मेन्टिस, पक्षी आदि इन लटों के शत्रु हैं। तीसरे प्रकार के हानिकारक कीट भूमि में रहकर जड़ें खाते हैं। जैसे दीमक व सफेद लट कच्चा खाद व फसल अवशेष से खेतों में ज्यादा फैलती है। अतः अच्छी सड़ी गोबर की खाद, कम्पोस्ट डालें। खेत में नमी रहने दें व बिल खोदकर रानी दीमक नष्ट कर दें।

वर्षा ऋतु में पहली भारी वर्षा होने पर सफेद लट के प्रौढ़ भूमि से निकलकर नजदीक के पेड़ों ;नीम, बेर, खेजड़ीद्ध को खाते हैं। पेड़ों को खाते भ्रंगों को पकड़कर व प्रकाश पाश द्वारा नष्ट करना चाहिये व 10–12 टन नीम की खली प्रति हैक्टर खेत में देना चाहिए। मित्र कीटों की उपस्थिति के बावजूद कभी–कभी फसलों के शत्रु कीट आर्थिक क्षति स्तर से जयादा हो जाते हैं तो सुण्डीयों हेतु बी.टी., एन.पी.वी. आदि का उपयोग प्रभावी रहता है। नीम की पत्तियों का रस, तेल व खेती में उपस्थित आजाडीरेक्टिन बहुत प्रभावशाली कीटनाशक है। यह सभी कीड़ों कि रोकथाम करता है। फेरोमेनट्रेप व प्रकाश पाश द्वारा भी प्रौढ़ कीट मार कर इनकी संख्या में कमी लाई जा सकती है।

जरूरी है मित्र कीटों का संरक्षण

सभी कीट फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले नहीं होते हैं। कुछ कीट फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को नष्ट करते हैं। अतः कीट नियंत्रण केवल रसायनों से ही नहीं होता अपितु जीवो जीवस्य भोजनम के सिद्धांत पर प्रकृति भी कीट नियंत्रण करती है। लाभकारी कीटों को हम मित्र कीटों के नाम से पुकारते हैं। कीटों के अतिरिक्त सांप, कौवे, छिपकली, मैंढ़क, गौरेया, कठफोड़वा आदि भी कीट नियंत्रण में सहायक हैं। परभक्षी कीटों में लेडी बर्ड बीटल ;दालद्ध मोयला, चेपा, माहू, तेला, स्केल, मिलिबग आदि कीटों का नियंत्रण करती हैं। एक बीटल एक दिन में 50 तक मोयला खा जाती है। मेन्टिस की संख्या यद्यपि कम होती है किन्तु यह एक दिन में 160 तक कोमल शरीर वाले हानिकारक कीड़े खा जाता है। इसी तरह क्रायसोपा नामक कीट जो हल्के हरे रंग का पारदर्शी पंखों वाला होता है, मोयला, सफेद मक्खियों, बारीक छोटे कीड़ों व उनके अण्डों को तथा कपास के गोले के कीड़ों को शुरूआती अवस्था में खाता है मकड़ी दिन में 16 तक कीट खा जाती है। लाईमड वेस्प ;भिरड़द्ध खेत की सुण्डीयों को खाता है। इन कीटों व पक्षियों को पहचान कर इनका संरक्षण करना चाहिये। यदि फसल में दो हानिकारक व एक मित्र कीट के अनुपात मे उपस्थित है तो किसी कीटनाशक के छिड़काव की आवश्यकता नहीं होती है।

ट्राइकोग्रामा :– यह मित्र कीट है यह आकार में इतना सूक्ष्म है कि आलपिन के सिरे पर 8–10 व्यस्क बैठ सकते हैं। ये पतंगों के समूह के हानिकारक कीटों के अण्डों में अपने अण्डे देता है व प्यूपा अवस्था तक अपना जीवन चक्र उस अण्डे में बिताकर व्यस्क बन जाता है फिर पुनः पतंगों के अण्डों में अपने अण्डे देने लगता है। इसका जीवन चक्र गर्मियों में 8–10 दिन व सर्दियों में 9–12 दिन होता है।

उपयोग विधि :–एक कागज का कार्ड जिसे ट्राइकोकार्ड कहते हैं पर ट्राइकोग्रामा के बीस हजार अण्डे लगे होते हैं। अण्डे फूटने की तिथि से एक दिन पहले इन कार्डों को खेत में 10–10 मीटर की दूरी पर बांध देते हैं। एक हैक्टर में 100 स्थानों पर ट्राइकोकार्ड लगाते हैं। इनके अण्डे से फूटकर कीट निकलकर खेत में समान रूप से फैल जाते हैं। सावधानी रखें कि इन कार्ड्स पर सूर्य की सीधी धूप ना पड़े।

फेरोमेन ट्रेप :– प्रकृति में नर व मादा कीट एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करने हेतु विशेष प्रकार की गंध हारमोन्स छोड़ते हैं। जिसके कारण ये एक दूसरे के पास पहुंच जाते हैं। वैज्ञानिकों ने इन हारमोन्स को पहचान कर प्रयोगशालाओं में इनकी गंध से केप्सूल तैयार कर लिये हैं। जिनकी गंध कई गुणा ज्यादा है। एक कीप के नीचे थैली लगी होती है व ऊपर तस्तरी लगी रहती है। तस्तरी में अंदर की तरफ कैप्सूल ;ल्यूरद्ध लगा देते हैं। इसकी गंध से नर कीट आकर्षित होकर आते हैं व कीप में गिरकर थैली में फंस जाते हैं इससे नर व मादा कीट मिल नहीं पाते हैं। जिससे अगली पीढ़ी का जन्म नहीं हो पाता है। इसे खेत में फसल से एक फुट ऊपर लकड़ी के सहारे लगाया जाता है।

प्रकाशपाश से कीट नियंत्रण

वर्षा के मौसम में प्रौढ़ तितलियां, कीट, मोथ, भृंग आदि अपने साथी की तलाश में रोशनी की ओर आकर्षित होते हैं। इनमें ज्यादातर हानिकारक कीट होते हैं। यदि खेत में बल्ब लगा दें व उसके नीचे एक परात/तगारी या गड्ढ़ा बनाकर उसमें मिट्टी का तेल या कीटनाशी मिलाकर पानी भर देवें। सायंकाल से रात्रि 10 बजे तक बल्ब या लालटेन जलाएंगें तो कीट आकर्षित होंगें व रोशनी से टकराकर नीचे पानी में गिरकर मर जाते हैं व फसलों में लटें नहीं होंगी।

एन.पी.वी. का छिड़कावः–

हरी सुण्डी/लट के नियंत्रण हेतु एन.पी.वी. के घोल का छिड़काव करते हैं। इसके छिड़काव से लटें संक्रमित होकर 3–4 दिनों में मर जाती हैं व पौधों पर लटक जाती हैं। इन्हें चुन–चुन कर पीस कर पानी में मिलाकर पुनः छिड़काव किया जा सकता है।

बी.टी. का छिड़काव

फली छेदक नियंत्रण हेतु एक लीटर प्रति हैक्टर बी.टी. का छिड़काव करने से लटें एक से 3 दिन में मर जाती हैं।

पक्षियों द्वारा कीट नियंत्रण :–

खेत में बांस ग रूप में लगा देते हैं व इसके दोनों और छोटी क्यारियों में गुड़ का पानी रखते हैं। इससे पक्षी आकर्षित होते हैं व हानिकारक कीटों को खाते हैं।

बीमारियों का प्रबंध

जैविक विधियों द्वारा बीमारियों का नियंत्रण कीट नियंत्रण के बजाय थोड़ा मुश्किल होता है। अतः फसलों को रोगों से बचाने हेतु शुरू से सावधान रहना चाहिये व निम्न बिन्दुओं को अपनाना चाहिये–

1.ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से भूमि में छिपे हानिकारक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं।

2.फसल बदल कर बोयें। एक फसल की बुआई लगातार नहीं करें इससे फसल में लगे कीटाणुओं को अगले मौसम में पोषक पौधे नहीं मिलेंगे और मर जायेंगे।

3.रोगरोधी किस्मों का चुनाव करना चाहिये इनमें रोगों से लड़ने की शक्ति होती है।

4.बीज गर्मी में तेज धूप में सुखाकर बोना चाहिये जिससे इसमें उपस्थित जीवाणु मर जायें।

5.ट्राइकोडर्मा फफूंद से बीज उपचारित कर बोना चाहिये जिससे ये बीज व भूमि जनित रोगों से छुटकारा दिला सके।

6.रोगी पौधों को देखते ही उखाड़ कर जला देना चाहिये ताकि रोग आगे अन्य पौधों में न फैले।

ट्राइकोडर्मा :–

ट्राइकोडर्मा नामक मित्र फफूंद द्वारा जड़गलन, उखटा, तनागलन, आदि भूमिजनित फफूंद रोगों से फसलों को बचा सकते हैं। ट्राइकोडर्मा से बीजोपचार, भूमि उपचार, जड़ोपचार करने से मृदा में ये अपनी संख्या बढ़ा लेती हैं व रोग पैदा करने वाली हानिकारक फफूंद को फैलने से रोक देती हैं व नष्ट कर देती हैं।

उपयोग विधि :–

बीज उपचार हेतु बीज बर्तन में लेकर भिगोयें तथा 4 से 8 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाऊडर प्रति किलोग्राम बीज के हिसाब से मिलाकर बीजों को हिलाकर दवा उन पर चिपका कर बुआई करें। जड़ोपचार हेतु 5 लीटर पानी में 500 ग्राम ट्राइकोडर्मा मिलाकर घोल बनायें। घोल में जड़ों को 30 मिनट डुबोकर पौध रोपित करें तथा बचे हुए घोल को खेत में प्रयोग कर लें। भूमि उपचार हेतु एक किलो ट्राइकोडर्मा पाऊडर 30 किग्रा सड़ी गोबर की खाद में मिला दें। इसे एक एकड़ में छिड़ककर मिट्टी में मिला दें फिर बुवाई करें।

राज्य में जयपुर, अजमेर, बून्दी, चित्तौड़गढ़, भरतपुर, जोधपुर, बांसवाड़ा व हनुमानगढ़ मे स्थित कीट प्रबंध प्रयोगशालाओं में ट्राइकोडर्मा का उत्पादन किया जा रहा है।

कीट व रोग से बचने के देशी उपाय

कुछ किसानों ने अपने स्तर पर देशी उपाय करके कीट रोग नियंत्रण में सफलता पाई है। इन उपायों की वैज्ञानिकों द्वारा पुष्टि होना अभी बाकी है। फिर भी किसानों की जानकारी के लिए इनका विवरण दिया जा रहा है।

छाछ का कीट–रोग नियंत्रण में उपयोग

1. देशी गाय का 10–15 दिन पुराना खट्टा छाछ 100 से 150 मि.ली. को 15 लीटर पानी में मिलाकर उसे एक सार कर लें। इसको चना एवं अरहर में लगी इल्लियां ;सुण्डीयाद्ध एवं मौजेक बीमारी से ग्रस्ति फसल पर छिड़काव करें।
2. 4 लीटर छाछ 100 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के पहले भूमि पर छिड़कें। यह मृदा अनुकूलन का कार्य करेगी।
3. 10 लीटर छाछ को एक मटके में एक माह तक रखें। बाद में इसमें आधा किलो गेहूं का आटा मिलाऐं। इस मिश्रण को पतला करके चने के खेत में चने की इल्ली का नियंत्रण करने के लिए छिड़काव करें।
4. चने का उकठा रोग यूजे विल्ट के नियंत्रण के लिए चने के बीज को छाछ से 4 घंटे उपचारित कर बुवाई करें।

सुविचार

दूसरों को नियंत्रित करने वाला व्यक्ति शक्तिशाली हो सकता है, लेकिन जिस व्यक्ति ने स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली हो, वह उससे कहीं अधिक महान बलशाली होता है।

- लाओ त्से त्ज़ु

हसंते रहो!!

पिता (बेटे से) - देखों बेटे , जुआ नहीं खेलते यह ऐसी आदत हैं कि यदि इसमें आज जीतोगे तो कल हारोगे , परसों जीतोगे तो उससे अगले दिन हार जाओगे

****

बेटा - बस , पिताजी ! मैं समझ गया , आगे से मैं एक दिन छौड़कर खेला करूंगा

***

अध्यापक ने परीक्षा में चार पृष्ठों का निबन्ध लिखने को दिया - विषय था- 'आलस्य क्या हैं ?

***

एक विद्यार्थी ने तीन पृष्ठों को खाली छोड़ दिया और चौथे पर बड़े - बड़े अक्षरों में लिखा - 'यही आलस्य हैं

फ़सल अवशेषों में आग मत लगाइये, इससे जमीन की उर्वरा शक्ति बढाइये

आर के एस राठौर, उप क्षेत्र प्रबन्धक, इफ़को ,रीवा (म प्र)

हमारे देश में फ़सलों के अवशेषों (Crop Residue) का उचित प्रबन्ध करने पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है या कहें कि इसका उपयोग मृदा में जीवांश पदार्थ अथवा नत्रजन की मात्रा बढाने के लिये नही किया जाकर इनका अधिकतर भाग या तो दूसरे घरेलू उपयोग में किया जाता है या फ़िर इन्हें नष्ट कर दिया जाता है जैसे कि गेहूं, गन्ने की हरी पत्तियां, आलू, मूली, की पत्तियां पशुओं को खिलाने में उपयोग की जाती है या फ़िर फ़ेंक दी जाती हैं। कपास, सनई, अरहर आदि के तने गन्ने की सूखी पत्तियां, धान का पुआल आदि सभी अधिकतर जलाने के काम में उपयोग कर लिये जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों में एक समस्या मुख्य रूप से देखी जा रही है कि जहां हार्वेस्टर के द्वारा फ़सलों की कटाई की जाती है उन क्षेत्रों में खेतों में फ़सल के तने के अधिकतर भाग खेत में खडे रह जाते हैं तथा वहां के किसान खेत में फ़सल के अवशेषों को आग लगाकर जला देते हैं। अधिकतर रबी सीजन में गेहूं की कटाई के पश्चात विशेष रुप से देखने को मिलता है कि किसान अपनी फ़सल काटने के पश्चात फ़सलों के अवशेष (Crop Residue) को उपयोग न करके उसको जला कर नष्ट कर देते हैं। इस समस्या की गंभीरता को देखते हुये प्रशासन द्वारा बहुत से जिलों में तो गेहूं की नरवाई जलाने पर रोक लगाई है तथा किसानों को शासन, कृषि विभाग एवं सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा इस बारे में समझाने के प्रयास किये जा रहे हैं कि किसान अपने खेतों में अवशेषों में आग न लगा कर इसे खेत की जीवांश पदार्थ को बढाने में उपयोग करें ।

इसी प्रकार गांवों में पशुओं के गोबर का अधिकतर भाग खाद बनाने के लिये प्रयोग न करते हुये इसे ईंधन के रूप में उपयोग किया जा रहा है जबकि इसी गोबर को यदि गोबर गैस संयत्र में उपयोग किया जाय तो इससे बहुमूल्य एवं पोषक तत्वों से भरपूर गोबर की सूरी प्राप्त कर खेत की उर्वरा शक्ति बढाने में उपयोग करना चाहिये साथ ही गोबर गैस को घर में ईंधन के रूप में प्रयोग किया जा सकता है तथा योजना को सफ़ल बनाने हेतु शासन द्वारा गोबर गैस बनाने के लिये अनुदान भी दिया जाता है परन्तु फ़िर भी परिणाम संतोषप्रद नहीं है जबकि जमीन में जीवांश पदार्थ की मात्रा निरन्तर कम होने से उत्पादकता या तो घट रही है या स्थिर हो गई है अत समय रहते इस पर ध्यान देकर जमीन की उर्वराशक्ति बढाने पर ही कृषि की उत्पादकता बढा पाना संभव हो सकता है जो कि देश की बढती जनसंख्या को देखते हुये नितान्त ही आवश्यक है।

हमारे देश में हम फ़सल अवशेषों का उचित उपयोग न कर इसका दुरुपयोग कर रहे हैं जबकि यदि इन अवशेषों को सही ढंग से खेती में उपयोग करें तो इसके द्वारा हम पोषक तत्वों के एक बहुत बढे अंश की पूर्ति इन अवशेषों के माध्यम से पूरा कर सकते हैं।

फ़सलों के विभिन्न अवशेषों में नत्रजन, फ़ास्फ़ोरस एवं पोटाश तत्वों की मात्रा				
क्र	फ़सल अवशेष	नत्रजन प्रतिशत	फ़ास्फ़ोरस प्रतिशत	पोटाश प्रतिशत
1	गेहूं का भूसा	0.53	0.10	1.10
2	जौ का भूसा	0.57	0.26	1.20
3	गन्ने की पत्तियां	0.35	0.10	0.60
4	गन्ने की खोई	2.25	0.12	.
5	धान की पुआल	0.36	0.08	0.70
6	राई/सरसों का तना	0.57	0.28	1.40
7	मक्का की कडवी	0.47	0.57	1.65
8	बाजरे की कडवी	0.65	0.75	2.50
9	धान की भूसी	0.40	0.25	0.40
10	मूंगफली का छिलका	0.70	0.48	1.40
11	आलू	0.52	0.09	0.85
12	मटर की सूखी पत्तियां	0.35	0.12	0.36
13	करंज की सूखी पत्तियां	2.65	0.41	2.42
14	वृक्षों की सूखी पत्तियां	1.50	0.45	2.50

उपरोक्त तालिका को देखकर हम स्पष्ट रूप से अनुमान लगा सकते है कि कितनी अधिक मात्रा में हम अपने देश में मिट्टी के आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति कर सकते हैं विदेशों में जहां अधिकतर मशीनों से खेती की जाती है अर्थात पशुओं पर निर्भरता नहीं है वहां पर फ़सल के अवशेषों को बारीक टुकडों में काटकर मिट्टी में मिला दिया जाता है यद्दपि वर्तमान में हमारे देश में भी इस कार्य के लिये रोटावेटर जैसी मशीन का प्रयोग प्रारम्भ हो गया है जिससे खेत को तैयार करते समय एक बार में ही फ़सल अवशेषों को बारीक टुकडों में काट कर मिट्टी में मिलाना काफ़ी आसान हो गया है। जिन क्षेत्रों में नमी की कमी हो वहां पर फ़सल अवशेषों को कम्पोस्ट खाद तैयार कर खेत में डालना लाभप्रद होता है।

आस्ट्रेलिया, रूस, जापान व इंग्लैंड आदि विकसित देशों में इन अवशेषों को कम्पोस्ट बनाकर खेत में डालते हैं या इन्हें खेत में अच्छी प्रकार मृदा में मिलाकर सडाव की क्रिया को सुचारु रुप से चलाने के लिये समय समय पर जुताई करते रहते हैं।

फ़सल अवशेषों का उचित प्रबन्ध करने के लिये आवश्यक है कि अवशेष (गन्ने की पत्तियों, गेहूं के डंठलों) को खेत में जलाने की अपेक्षा उनसे कम्पोस्ट तैयार कर खेत में प्रयोग करें। उन क्षेत्रों में जहां चारे की कमी नहीं होती वहां मक्का की कडवी व धान की पुआल को खेत में ढेर बनाकर खुला छोडने के बजाय गडढों में कम्पोस्ट बनाकर उपयोग करना आवश्यक है। आलू तथा मूंग फ़ली जैसी फ़सलों को खुदाई कर बचे अवशेषों को भूमि में जोत कर मिला देना चाहिये। मूंग व उर्द की फ़सल में फ़लियां तोडकर खेत में मिला देना चाहिये। इसी प्रकार यदि केले की फ़सल के बचे अवशेषों से

यदि कम्पोस्ट तैयार कर ली जाय तो उससे 1.87 प्रतिशत नत्रजन 3.43 प्रतिशत फ़ास्पोरस तथा 0.45 प्रतिशत पोटाश मिलता है।

खेतों के अन्दर सस्यावशेष प्रबन्ध . (Management of Crop Residues)

फ़सल की कटाई के बाद खेत में बचे अवशेष घास.फ़ूंस, पत्तियां व ठूंठ आदि (Crop ेिग्ल) को सडाने के लिये किसान भाई फ़सल को काटने के पश्चात 20-25 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हैक्टर की दर से छिडक कर कल्टीवेटर या रोटावेटर से काटकर मिट्टी में मिला देना चाहिये इस प्रकार अवशेष खेत में विघटित होना प्रारम्भ कर देंगे तथा लगभग एक माह में स्वंय सडकर आगे बोई जाने वाली फ़सल को पोषक तत्व प्रदान कर देंगे क्योंकि कटाई के पश्चात दी गई नाइट्रोजन अवशेषों में सडन की क्रिया (अम्दस्ज्देग-ूग्दह) को तेज कर देती है।

अगर फ़सल अवशेष खेत में ही पडे रहे तो फ़सल बोने पर जब नई फ़सल के पौधे छोटे रहते हैं तो वे पीले पड जाते हैं क्योंकि उस समय अवशेषों के सडाव में जीवाणु भूमि की नाइट्रोजन का उपयोग कर लेते है तथा प्रारम्भ में फ़सल पीली पड जाती है अत फ़सल अवशेषों का प्रबन्ध करना अत्यन्त आवश्यक है तभी हम अपनी जमीन में जीवांश पदार्थ (Organic matter) की मात्रा में वृद्धि कर जमीन को खेती योग्य सुरक्षित रख सकते हैं।

(पाक्षिक राशि फल)

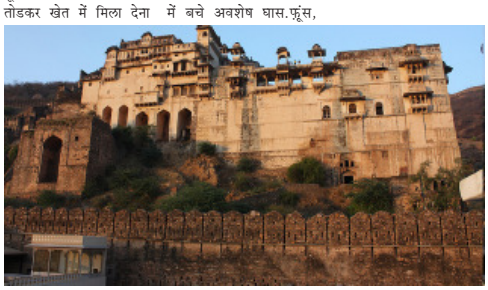

1–11–2013 से 14–11–2013

ज्योतिषाचार्य -पं.जयदत्त व्यास -जयपुर

AJS	स्वर्ण सवारी, धन लाभ, सम्मान की प्राप्ति योग, कुछ मानसिक तनाव भी रहेगा।
BKT	कार्य अवरोध, अपमान, मानसिक तनाव रहेगा, सावधानी रखें।
CLU	धन लाभ, प्रातिष्ठा वृद्धि, अनेक लोगों से संपर्क, विरोधियों पर विजय
DMU	विरोधियों द्वारा कष्ट, अपनो से परेशानी, शारीरिक कष्ट, लाभ कम खर्च अधिक।
NEW	पेट सम्बन्धित रोग, आर्थिक परेशानी पश्चात् लाभ।
FOX	मान प्रतिष्ठा, धन लाभ, शान्ति पूर्ण समय।
GPY	लाभ कम, खर्च अधिक, मानसिक व शारीरिक शिथिलता
HQZ	विरोधी परास्त, आत्म विश्वास से कार्य करे, लाभ पूर्ण समय।
IR	यात्रा योग, अपने अधिकारियों द्वारा परेशानी, प्रतिष्ठात्मक चिन्ता रहे।

बूँदी..... ऐतिहासिक धरोहर

बूँदी की स्थापना राजा बून्दा मीना ने की थी। 1342 तक मीनाओ ने राज्य किया । यहाँ के शासक राव सुर्जन हाड़ा ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी। शाहजहाँ के समय बूँदी के शासक छत्रसाल हाड़ा ने दारा की ओर से धरमत की लड़ाई में भाग लिया था, किंतु वह इस युद्ध में मारा गया। बूँदी अपनी विशिष्ट चित्रकला शैली के लिए विख्यात है, जो इस अंचल में मध्यकाल में विकसित हुई। मुग़लों की अधीनता में आने के बाद यहाँ की चित्रकला में नया मोड़ आया। यहाँ की चित्रकला पर उत्तरोत्तर मुग़ल प्रभाव बढ़ने लगा। राव रत्नसिंह (1631- 1658 ई.) ने कई चित्रकारों को दरबार में आश्रय दिया। शासकों के सहयोग एवं समर्थन तथा अनुकूल परिस्थितियों और नगर के भौगोलिक परिवेश की वजह से सत्रहवीं शताब्दी में बूँदी ने चित्रकला के क्षेत्र में काफ़ी प्रगति की। चित्रों में बाग, फ़व्वारे, फूलों की कतारें, तारों भरी रातें आदि का समावेश मुग़ल प्रभाव से होने लगा और साथ ही स्थानीय शैली भी विकसित होती रही। चित्रों में पेड़ पौधें, बतख तथा मयूरों का अंकन बूँदी शैली के अनुकूल है। सन 1692 ई. के एक चित्र बसंतरागिनी में बूँदी शैली और भी समृद्ध दिखायी देती है। कालांतर में बूँदी शैली समृद्धि की ऊँचाइयों को छूने लगी

महेन्द्र दधीच

बेसन के गट्टे

सामग्री ..बेसन 250 ग्राम – (...दही 250 ग्राम –...प्याज 2 ...लहसुन का पेस्ट २ चम्मच धनिया सूखा 2 चम्मच –..लौंग ४ –..सौंफ एक चम्मच –..गरम मसाला १ चम्मच ..लाल मिर्च 2 चम्मच –..तेल 2 बडे० चम्मच..)शक्कर १ चुटकी –..नमक स्वादानुसार

विधि –सबसे पहले बेसन में स्वादानुसार नमक, पिसी लाल मिर्च, लहसन पेस्ट और आघा कटा प्याज डालकर गूंथ लें और रोल बना लें। रोल को पानी में १५ से २० मिनट तक उबालें और जब रोल ठंडा हो जाए तो गोल गोल काट कर अलग रख लें। उस बीच कढ़ाई में तेल डालकर गर्म करें और इसमें कटी प्याज डालें और साथ में लहसुन-अदरक का पेस्ट डालें। प्याज के साथ उसको भी हल्का भूने(fry)। जब प्याज हल्की गुलाबी हो जाये तो उसमें ऊपर लिखी सामग्री को डालें। सूखा धनिया हल्का पिसा हुआ, हल्दी पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, लौंग और सौंफ डालें। लगभग पांच मिनट के बाद दही को अच्छी तरह फेंट ले और इस पेस्ट को कड़ाही में डालकर चलाएं। २ कप पानी डालकर उसमे बेसन के गट्टे डाले और 15 से 20 मिनट तक आंच पर पकाए।

परोसने का तरीका (– तैयार है गट्टे की सब्जी। इसको हरे घनिए से गार्निश करके गर्मागर्म परोसे।

सरोज कपिल

सृष्टी एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नामः...
संस्था का नामः...
पूरा पताः...
ग्राम :................................तहसील :................................
जिलाः................................राज्यः..........................पिन कोड
दूरभाष कार्यः................................निवासः................................

सदस्यता राशि

एक वर्ष :151 तीन वर्ष :351 पांच वर्ष :501

कृपया हमें/मुझे सृष्टी एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/मनीओर्डर/चैक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रूपये (अंकों में) शब्दों में :................................
बैंक का नामः................................ ड्राफ्ट चेक क्रमांकः........................दिनांकः................
स्थानः................................ प्रतिनिधि का नामः........................हस्ताक्षर सदस्यः................
दिनांकः......................

सृष्टी एग्रो

ग्रामीण विकास का संपूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064. Tel: 022-66998360/61Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908.Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

हिन्दकेम कॉर्पोरेषन के षेरसिंह स्टाल पर किसानों को जानकारी देते हुए।

एमएसपी से कम भावों पर किसान मूंगफली बेच रहे है

जयपुर, चोमू व सीकर मंडी में नई मूंगफली की आवक लगातार बढ़ रही दीपावली बाद प्रदेश की सभी मंडियों में नई मूंगफली की आवक तेज हो जाएगी भाव 3400-4700 से उतरकर 3000-4300 रुपये क्विंटल रहने की आशंका हैं।

पैदावार बेहतर होने तथा मांग में कमी से राजस्थान में इस साल मूंगफली के दाम न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से नीचे उतर गए हैं। केंद्र सरकार ने मूंगफली का एमएसपी 4000 रुपये क्विंटल घोषित किया हैं।

लेकिन बंपर पैदावार के चलते किसानों को प्रदेश की मंडियों में नई मूंगफली 3400 रुपये क्विंटल के भाव बेचने को मजबूर होना पड़ रहा है। प्रदेश की मंडियों में नई मूंगफली की आवक बढ़कर लगभग 1.25 लाख बोरी (प्रति बोरी 40 किलो) होने का अनुमान है। दीपावली बाद आवक में और बढ़ोतरी होगी।

ऐसे में मूंगफली के भावों में अभी 400 रुपये क्विंटल की गिरावट और आने की संभावना व्यक्त की जा रही है। उल्लेखनीय है कि राजस्थान कृषि निदेशालय ने इस साल प्रदेश में 5.79 लाख टन मूंगफली की पैदावार होने का अनुमान लगाया है, जबकि पिछले साल 6.16 लाख टन की पैदावार हुई थी। इस तरह इस बार मूंगफली की पैदावार में करीब सात फीसदी की कमी का अनुमान है। थोक व्यापारियों का कहना कि प्रदेश की जयपुर, चोमू व सीकर मंडी में नई मूंगफली की आवक लगातार बढ़ रही है। दीपावली बाद प्रदेश की लगभग सभी मंडियों में नई मूंगफली की आवक तेज हो जाएगी। इससे मूंगफली के भाव मौजूदा स्तर 3400 से 4700 से उतरकर 3000 से 4300 रुपये क्विंटल रह जाने की आशंका है।

जबकि इस साल नई मूंगफली की क्वालिटी बेहतर है। नई मूंगफली में दाना 70 से 72 काउंट का निकल रहा है। लेकिन मांग में कमी की वजह से किसानों को मूंगफली के बेहतर दाम नहीं मिल पा रहे हैं।

हालांकि इस बार पर्याप्त पानी और मौसम का साथ मिलने से मूंगफली का दाना 70 से 72 काउंट का निकल रहा है। साथ ही प्रति हेक्टेयर उत्पादकता भी बढ़ी है। इस वजह से मूंगफली में मंदी की धारणा बनी हुई है।

अमेरिका जल्द ही करेगा राजस्थान में खेती

जयपुर। अमरीका जल्द ही राजस्थान के कृषि क्षेत्र में प्रवेश करेगा। इसके तहत अमरीका की भारत में राजदूत नैंसी पॉवेल ने जयपुर जिले के बस्सी स्थित सेंटर ऑफ एक्सीलेंस का दौरा किया। दौरे के बाद पॉवेल ने कहा कि अपने कृषि संसाधन बढ़ाने के लिए अमरीका की ओर से वे राजस्थान में दौरे पर है। वे यहां पर कृषि क्षेत्र में संभावना तलाशने आई है। यहां पर माकूल परिस्थितियों को देखने के बाद वे पब्लिक प्राइवेट रूप पार्टनरशिप के तहत खेती के लिए अनुबंध करेंगे।

मुख्य रूप से वे यहां पर हो रही जैतून की खेती को लेकर प्रभावित है और इसकी मार्केटिंग को लेकर वे अनुबंध पर चर्चा करेंगी। इसके अतिरिक्त वे यहां उगाई जा रही हरी सब्जियों की तकनीक से भी खासी प्रभावित हुई है।

मंदी के दौरान भारत और अमेरिका रिश्ते और व्यापार का असर की चर्चा करते हुए पॉवेल ने कहा कि दोनों के रिश्ते पहले से मजबूत हुए है। अन्य मसलों पर आगामी माह में इंडोनेशिया में होने वाली नेक्सट सम्मेलन में दोनों देश के प्रतिनिधि आपस में चर्चा करेंगे।

एक हजार किलो मिलावटी मावा बरामद

जयपुर। त्योहारी सीजन में खाद्य विभाग ने नकली और घटिया खाद्य सामग्री पर रोक लगाने के लिए कमर कस ली है। इसी क्रम में विभाग ने राजधानी जयपुर में करीब 1 हजार किलो नकली मावा जब्त किया है। विभागीय सूत्रों के अनुसार मिलावट के खिलाफ जारी अपने अभियान के तहत सुबह

बीकानेर से जयपुर पहुंचने वाले घटिया मावे को जब्त करते हुए उसे नष्ट करवा दिया। ये मिलावटी मावा एक ट्रांसपोर्ट कंपनी के कार्यालय से बरामद किया गया। इसके बाद इसे नष्ट कर दिया गया। हालांकि पिछली कार्रवाइयों की तरह ही मिलावट के पीछे का सरगना विभाग की टीम की पहुंच से बाहर रहा।

किसानों ने किया रोड जाम, धान खरीद प्रबंधों से नाराज

पंजाब अनाज मंडी खन्ना में धान खरीद प्रबंधों से खफा किसानों ने समराला रोड पर जाम लगा दिया। इस दौरान मंडी में फसल बेचने पहुंचे बड़ी संख्या में किसानों ने सड़क पर धरना लगाकर पंजाब सरकार व मार्केट कमेटी प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। इसके कारण सड़क पर वाहनों की कतारें लग गई।

खन्ना अनाज मंडी एशिया की सबसे बड़ी मंडी है। मगर, जब इस मंडी में ही किसानों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, तो राज्य की अन्य मंडियों में क्या हाल होगा? इसका अंदाजा खुद ही लगाया जा सकता है।

धान खरीद प्रबंधों के बारे में पंजाब सरकार के सभी दावे खोखले साबित हुए हैं। देश का अन्नदाता मंडियों में भटकने के लिए मजबूर है और कोई उनकी सुध नहीं ले रहा है। मौसम की मार से किसान बेहद परेशान हैं। दूसरा, जब वे मंडी में फसल लेकर जाते हैं, तो उन्हें बेवजह तंग किया जाता है। फसल बेचने के लिए अधिकारियों की मिन्नतें करनी पड़ती।

सेंट्रल वूल बोर्ड में लाखों की हेराफेरी

जोधपुर। सेंट्रल वूल डवलपमेंट बोर्ड एक बार फिर सीबीआई की जांच के दायरे में आ गया है। करोड़ों रुपए के गबन के पहले से तीन मामले सीबीआई में चल रहे थे, सीबीआई ने फिर शास्त्रीनगर स्थित ऑफिस में आकस्मिक जांच की है। इस बार वूल बोर्ड में गैर कर्मचारियों के नाम पर यात्रा बिलों का भुगतान करने, एक ही कम्युनिटी फर्टिलिटी सेंटर के नाम पर दुबारा अनुदान उठाने और चुनिंदा लोगों को गलत तरीके से पदोन्नत करने के मामले सामने आए हैं। सीबीआई ने एकाउंट, एनजीओ व स्टाफ संबंधी पूरा रिकॉर्ड जब्त कर लिया है, अब दस्तावेज की छानबीन की जा रही है।। सेंट्रल वूल डवलपमेंट बोर्ड पर आरोप लगे है निजी लोगों के नाम पर फर्जी टीए-डीए बिलों का भुगतान किया गया। निजी लोगों के यात्रा के लिए महंगी कारें भेजी और भुगतान किया गया। . भेड़ नस्ल सुधार के लिए जिन सीएफसी को अनुदान दिया जा चुका था, दुबारा उन्हीं का निरीक्षण कर फिर से अनुदान बांटा गया। बोर्ड ने अपने पसंद के लोगों को नियमविरुद्ध पदोन्नत कर लाभ पहुंचाया। डायरियां-कैलेंडर प्रिंट कराने में स्वीकृति राशि से ज्यादा का ऑर्डर दिया और भुगतान किया। वह भी मनपसंद ठेकेदार को। ऋण देने में भी गड़बड़ी। जिसने ऋण का आवेदन किया, उस ऋण को मंजूर करने का आदेश भी उसी अफसर के हस्ताक्षर से हुआ।

डेढ़ सौ ग्राम ज्यादा मिलेगी चीनी दिवाली पर

शिमला : दिवाली उत्सव के दौरान प्रदेश में साढ़े 16 लाख राशन कार्ड धारकों को चीनी का अतिरिक्त कोटा प्रदान किया जाएगा। इसके तहत प्रदेश में प्रत्येक राशन कार्ड धारक के प्रत्येक सदस्य को डेढ़ सौ ग्राम अधिक चीनी दी जाएगी। इसके अलावा लोग चीनी का ट्रिप्पल कोटा भी साथ ले जा सकेंगे। राज्य सरकार ने एक लाख ४७ हजार 20 क्विंटल चीनी के कोटे की व्यवस्था कर दी है। साथ ही केंद्र ने सरकार को 608 मीट्रिक टन चीनी के कोटे की भी व्यवस्था करने को कह दिया है। इसके लिए राज्य सरकार को केंद्र अलग से पैसे जारी करेगा। हालांकि इसके लिए लोगों को हफ्ता भर और इन्तजार करना पड़ेगा। राज्य सरकार २५ अक्टूबर के बाद डिपुओं में चीनी उपलब्ध करवाए जाने का दावा कर रही है। तीन माह के चीनी के कोटे के साथ सरकार

डेढ़ सौ ग्राम फेस्टिवल कोटा भी साथ में जारी करेगी, जो लोगों को प्रति सदस्य ७५० ग्राम प्रदान की जाएगी। राशन के कोटे की 600 ग्राम चीनी दी जाएगी। चीनी की दरें भी सरकार ने एपीएल और बीपीएल के लोगों के लिए अलग निर्धारित कर दी हैं। एपीएल राशन कार्ड धारकों को १९ रुपये 50 पैसे की दर से चीनी प्रदान की जाएगी। बीपीएल श्रेणी को यह पहले की तरह १३ रुपये ५० पैसे की दर से मिलेगी। इसके अलावा सरकार 'नो प्रोफिट नो लास' पर भी चीनी देगी।

केंद्र ने राज्य सरकार के लिए चीनी का महीने का 4898 मीट्रिक टन का कोटा तय किया हुआ है। इसके लिए केंद्र सरकार, राज्य को 18 रुपये 50 पैसे प्रति किलो चीनी की रीइंबर्समेंट करती है। केंद्र ने राज्य को 608 मीट्रिक टन चीनी के फेस्टिवल कोटे को खरीदने को कह दिया है।

विज्ञापन हेतु संपर्क करें

मुंबई 08898600347
जयपुर 01413130277
पंजाब.,.....09820388538
दिल्ली .,,,,,09928960900

मुक्त विवि की शाखाएं ग्रामीण क्षेत्रों में भी होंगी

सोमेश्वर (अल्मोड़ा) : ग्रामीण इलाकों में जिन स्थानों में उच्च शिक्षा की बेहतर व्यवस्थाएं नही हैं, वहां उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के केन्द्रों का विस्तार किया जाएगा। ताकि युवा पीढ़ी को संसाधनों का अभाव न झेलना पड़े।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के पर्यवेक्षक दल के सोमेश्वर महाविद्यालय के भ्रमण के दौरान डा. नीरजा ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि ग्रामीण इलाकों में कई महाविद्यालयों को संसाधनों के अभाव में पीजी की मान्यता नहीं मिल पाई है। ऐसे में छात्रों को शिक्षण के लिए दूरस्थ महाविद्यालयों में प्रवेश लेना पड़ता है। आर्थिक रुप से कमजोर कई छात्र इस कारण अपनी शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाते। इस कमी को दूर करने के लिए मुक्त विश्वविद्यालय ग्रामीण इलाकों में अपने केन्द्रों का विस्तार कर रहा है। ताकुला ब्लाक में भी जीआईसी भकूना व राजकीय महाविद्यालय में इसी उद्देश्य से केन्द्रों की स्थापना की गई है

सहकारी बैंक की शाखाएं कोर बैंकिंग से जुडेगी

अल्मोड़ा : सहकारिता को मजबूत करने व उपभोक्ताओं को बेहतर सुविधा मुहैया कराने के लिए सहकारी बैंक शीघ्र ही अपनी सभी शाखाओं को सीबीएस से जोड़ेगा। इसके लिए युद्ध स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं।

जिला सहकारी बैंक के प्रशासक प्रशांत भैसोड़ा ने पत्रकारों से वार्ता के दौरान यह बात कही। भैंसोड़ा ने कहा है कि सहकारिता के माध्यम से अधिकाधिक लोगों तक लाभ पहुंचाने के प्रयास गंभीरता से किए जा रहे हैं। अप्रैल 2013 तक सहकारी बैंकों की सभी शाखाओं को सीबीएस से जोड़ लिया जाएगा। इसके साथ ही बागेश्वर में पृथक सहकारी बैंक खोले जाने पर भी जनप्रतिनिधियों की सहमति से कार्य शुरू करा दिया गया है।

S.S. AGRO (INDIA) MUMBAI

(DIRECT IMPORT FOR YOUR FERTILIZER/CHEMICALS)

- ZINK EDTA/COPPER EDTA/FE EDTA
- 100% WATER SOLUBLE FERTILIZER (NPK)
- HUMIC ACID
- SEAWEED EXTRACT
- AMINO ACID
- POTASSIUM HUMATE
- FULVIC ACID
- EDDHA
- NATCA
- BRASSINOLIDE
- DAP
- SODA ASH
- SODIUM SULPHIDE
- AMONIUM CLORIDE
- SODIUM BICARBONATE
- CALCIUM CARBIDE
- PHOSPHORIC ACID
- TRI SODIUM PHOSPHATE
- CITRIC ACID
- STPP

ALL KIND OF INORGANIC/ Organic Chemicals
CONTACT NO.-022-6710-3722
EMAIL:aarti@hindchem.com

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक-**सुरेश जी. शर्मा** की ओर से सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, शर्मा इंडस्ट्रीयल इस्टेट, गोरेगांव, पूर्व, मुंबई-62 से मुद्रीत किया और 307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड, मालाड (पश्चिम),मुंबई - 400064 यहां से प्रकाशित किया। संपादक-**सुरेश जी. शर्मा.**
contact Detail:Tel: 022-66998360/61.Fax: 022-66450908,Cell-9321758550,Email:info@srushtiagronews.com,website:www.srushtiagronews.com